वाप्कोस दर्पण

गृह पत्रिका

अप्रैल – जून, 2016 अंकः 81 त्रैमासिक

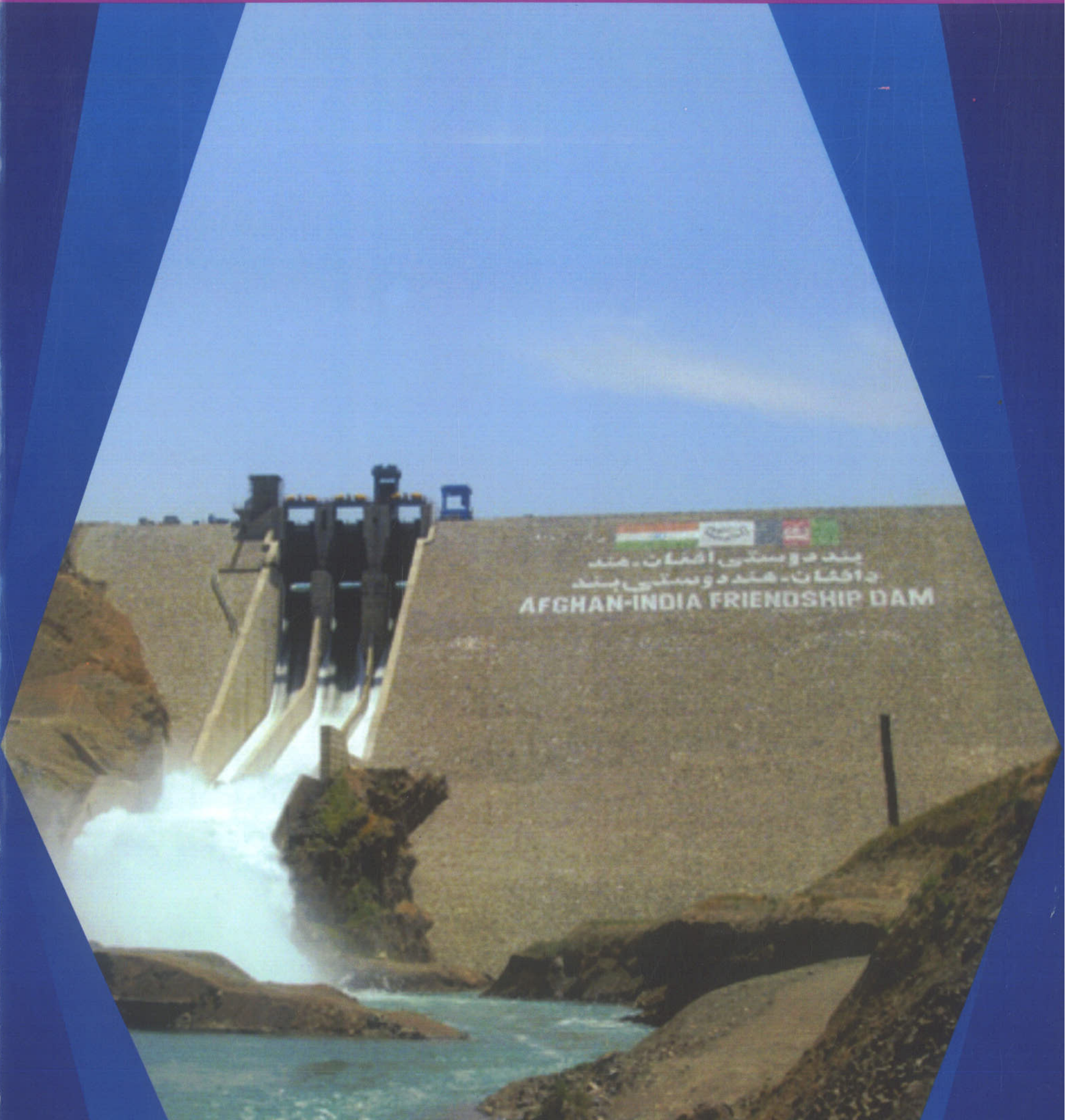

इण्डिया वाटर वीक 2016 में विशेष सत्र जल फिल्मोत्सव में सुश्री उमा भारती, माननीया जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री को अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए ।

इण्डिया वाटर वीक 2016 में आयोजित फिल्मोत्सव के दौरान तकनीकी सत्र में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस के साथ पैनल के माननीय तकनीकी सदस्य

वाप्कोस दर्पण

अप्रैल-जून, 2016 अंक-81

संरक्षक
आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

तकनीकी संपादन सलाहकार
अमिताभ त्रिपाठी, मुख्य अभियंता

संपादन मण्डल
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक
एस.विजयराव, वरि.महा प्रबंधक
अमिताभ त्रिपाठी, मुख्य अभियंता

संपादक
निम्मी भट्ट,
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

उप संपादक
डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
गीता शर्मा, वरि.अनुवादक
शारदा रानी, सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं0
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	1
सम्पादकीय	2
राजभाषा गतिविधियां	3
स्कोप उत्कृष्टता पुरस्कार	4
अफगान भारत मैत्री बांध	6
4th इण्डिया वाटर वीक, 2016	13
शिकागो में स्वामी विवेकानंद जी द्वारा दिया गया भाषण	18
संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष समिति द्वारा नराकास (गुडगांव) के साथ विचार विमर्श कार्यक्रम	20
लेख – क्या टूटी हड्डियां जुड़ सकती हैं	23
नराकास (गुडगांव) के तत्वावधान में वाप्कोस द्वारा ''गुगल वाइस व यूनिकोड'' पर हिन्दी कार्यशाला	24
कविता – स्कूल डेज़	26
लेख – शिक्षण का माध्यम हो मातृभाषा	28
लेख – सुरक्षा हेतु दीर्घकालीन उपाय	30
लेख – आत्मकथा - एक फाइल की	33
कार्मिक प्रभाग	36
लेख – कार्यालय के कार्य में मूल टिप्पण आलेखन से बढ़ाएं राजभाषा का प्रयोग	39
विभागीय काम काज में प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्द	42

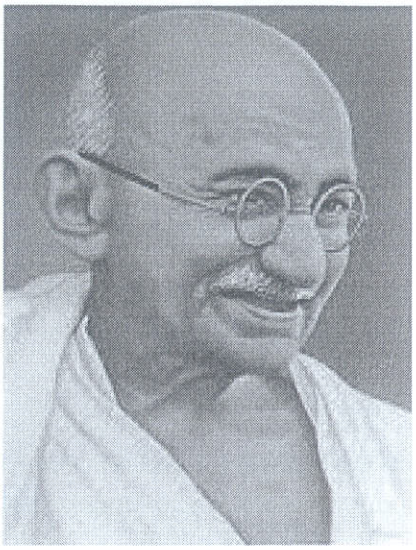

समाजवाद एक सुन्दर शब्द है, और जहां तक मुझे मालूम है, समाजवाद में समाज के सब सदस्य बराबर होते हैं – न कोई नीचा, न कोई ऊंचा। किसी व्यक्ति के शरीर में सिर सबसे ऊपर होने के कारण ऊंचा नहीं होता। और न पैर के तलवे जमीन को छूने के कारण नीचे होते हैं। जैसे व्यक्ति के शरीर के सब अंग बराबर होते हैं, वैसे ही समाजरूपी शरीर के सारे अंग भी बराबर होते हैं। यही समाजवाद है।

- अहिंसक समाजवाद की ओर से, पृ0 10

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

वाप्कोस की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' के माध्यम से हम रोचक, उपयोगी व ज्ञानवर्धक सामग्री आप तक पहुंचाने का प्रयास करते रहे हैं ।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि वाप्कोस को 'लोक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट व सर्वश्रेष्ठ योगदान हेतु श्री प्रणब मुखर्जी, भारत के माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा 'स्कोप पुरस्कार' प्रदान किया गया । यह पुरस्कार वाप्कोस के हर एक अधिकारी, स्टाफ, कर्मचारी, सहयोगी तथा कम्पनी के शुभचिंतकों के अथक प्रयासों, समर्पण तथा अपनेपन की भावना का परिणाम ही है । इसी के साथ वाप्कोस उत्कृष्टता की नई ऊंचाईयों को प्राप्त करने के लिए आशाबद्ध है ।

इस पत्रिका के माध्यम से मैं वाप्कोस के सभी सहकर्मियों से अपील करता हूं कि कम्पनी की प्रतिष्ठा को ओर निखारने में, ग्राहकों को अच्छी सेवा देने में और नए व्यवसाय प्राप्त करने में अपना अमूल्य सहयोग दें । पत्रिका को और सुरूचिपूर्ण बनाने के लिए अपने क्षेत्र की मुख्य गतिविधियां, लेख, प्रेरणास्पद कहानियां व कविताएं आदि भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें ।

साथियों, मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी टीम भावना से निरन्तर कार्य करते हुए कम्पनी की छवि को उज्जवल बनाते रहेंगे ।

शुभकामनाओं के साथ,

आर.के. गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सम्पादकीय

वाप्कोस गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का अंक-81 आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पत्रिका के माध्यम से निरंतर आप से सम्पर्क स्थापित करने का एक अनूठा अवसर प्राप्त होता रहता है जोकि एक सुखद अनुभूति है।

मुझे यह बताते हुए बहुत ही खुशी का अनुभव हो रहा है कि श्री प्रणब मुखर्जी, भारत के माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा श्री अनंत जी.गीते, माननीय केन्द्रीय मंत्री (भारी उद्योग व लोक उद्यम) तथा श्री जी.एम.सिद्देश्वर, माननीय राज्य मंत्री (भारी उद्योग व लोक उद्यम) भारत सरकार की उपस्थिति में हमारे अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय को 'विशिष्ट नेतृत्व पुरस्कार' प्रदान किया गया । यह हमारे लिए बड़े ही गर्व की बात है। हम आभारी हैं अपने अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय के जिनके कुशल नेतृत्व में हमें कार्य करने का अवसर मिला। आइए, साथियों हम भी अपने अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक के कुशल नेतृत्व में अपनी कार्यकुशलता को स्थापित करने का प्रण लें और कम्पनी को उत्कृष्ट मुकाम पर ले जाएं।

पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी का धन्यवाद करना चाहती हूं कि पत्रिका को ओर अधिक रोचक व पठनीय बनाने के लिए आपसे समय-समय पर रचनाएं, लेख, कविताएं आदि प्राप्त होती रहती हैं। पत्रिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु उत्कृष्ट लेख व तकनीकी रचनाएं आदि प्रकाशित करने का भी प्रयास किया जाता है । इन लेखों को भेजने वाले सभी कार्मिक व उनके परिवार के सदस्य जिनसे हमें हिन्दी में लिखित लेख, कविताएं आदि प्राप्त होते हैं, हमारी पत्रिका को और अधिक आकर्षक व सुरूचिपूर्ण बनाते हैं, बधाई के पात्र हैं । आगे भी इसी सहयोग की कामना के साथ,

(निम्मी भट्ट)
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

राजभाषा गतिविधियां

- संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव के अध्यक्ष कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड सहित 10 सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों के साथ दिनांक 26.05.2016 को दिल्ली में विचार-विमर्श किया गया । इसका समन्वय कार्य भी वाप्कोस द्वारा किया गया ।

  विचार विमर्श-कार्यक्रम के दौरान वाप्कोस में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सभी मदों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा समिति सदस्यों द्वारा वाप्कोस में किये जा रहे कार्यों को सन्तोषजनक पाया तथा समन्वय कार्य की सराहना की गई ।

- संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास (गुड़गांव) के वाप्कोस सहित दस सदस्य कार्यालयों के साथ दिनांक 26.05.2016 को विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किए जाने के संबंध में संबंधित सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों के साथ दिनांक 11.05.2016 को श्री अमर कुमार, मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में एक समन्वय बैठक वाप्कोस कार्यालय में आयोजित की गई जिसमें विचार-विमर्श कार्यक्रम से संबंधित समन्वय कार्यों तथा प्रश्नावली भरने के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई ।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव के तत्वावधान में दिनांक 21.6.2016 को वाप्कोस द्वारा ''गुगल वाइस व यूनीकोड'' पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 10.6.2016 को आर्थिक सलाहकार की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- दिनांक 28.06.2016 को श्री अमर कुमार, मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबन्धक (रा.भा.का.)

स्कोप उत्कृष्टता पुरस्कार

श्री प्रणब मुखर्जी, भारत के माननीय राष्ट्रपति ने श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस को श्री अनंत जी.गीते, माननीय केन्द्रीय मंत्री (भारी उद्योग व लोक उद्यम) तथा श्री जी.एम.सिद्देश्वर, माननीय राज्य मंत्री (भारी उद्योग व लोक उद्यम), भारत सरकार की उपस्थिति में निम्नलिखित वर्गों के अंतर्गत 'लोक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट व सर्वश्रेष्ठ योगदान हेतु स्कोप पुरस्कार' प्रदान किया :

- संस्थागत
- विशिष्ट नेतृत्व

संस्थागत पुरस्कार

विशिष्ट नेतृत्व पुरस्कार

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक ने कहा

'यह पुरस्कार वाप्कोस के हर एक अधिकारी, स्टाफ, कर्मचारी, सहयोग तथा कम्पनी के शुभचिंतकों के अथक प्रयासों, समर्पण तथा अपनेपन की भावना के परिणामस्वरूप है । यह वह अवसर है जब उन सब की प्रशंसा की जाए जो कम्पनी की सफलता के लिए कार्यरत हैं। वाप्कोस उत्कृष्टता की नई ऊचांईयों को प्राप्त करने के लिए आशाबद्ध है तथा प्रबंधन इस प्रयास में सभी के सहयोग की अपेक्षा करती है ।

राजभाषा हिन्दी में काम करते समय ध्यान में रखने योग्य बातें

1. सरल हिन्दी का प्रयोग करें । लच्छेदार, साहित्यक भाषा की कार्यालय में कोई उपयोगिता नहीं है । ऐसी भाषा का प्रयोग करें, जिसे सभी आसानी से समझ सकें
2. जहां भी आपको लगे कि हिन्दी शब्द को समझने व पढ़ने वालों को कठिनाई हो सकती है, वहां मूल अंग्रेजी शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में अथवा अंग्रेजी में लिख दें ।
3. अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का बेहिचक प्रयोग करें ।
4. आधुनिक यंत्रों, कल-पुर्जों या तकनीकी विषयों आदि के लिए मूल अंग्रेजी के शब्द ही अपना लिए गए हैं इसलिए उन्हें देवनागरी लिपि में लिखें । जैसे टाइपराइटर, कम्प्यूटर आदि ।
5. लम्बे, उलझे हुए वाक्यों के स्थान पर छोटे-छोटे और सरल वाक्यों को लिखने का अभ्यास करें ।
6. अंग्रेजी में टिप्पणी, प्रारूप या पत्र लिखकर फिर उसका हिन्दी में अनुवाद करने के स्थान पर मूल रूप से हिन्दी में लिखने का अभ्यास करें । ऐसा करने से ही भाषा सरल, स्वाभाविक और बोधगम्य (कांम्प्रिहैंसिव) होगी ।

अफ़गान-भारत मैत्री बांध

प्रमेन्द्र कुमार अग्रवाल
प्रमुख (सलमा बांध परियोजना)

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और अफ़गानिस्तान के राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद अशरफ गनी ने पश्चिमी अफ़गानिस्तान के हेरात प्रांत में 4 जून, 2016 को संयुक्त रूप से **''अफ़गान-भारत मैत्री बांध'' (सलमा बांध)** का उदघाटन किया । **इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को अफगानिस्तान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ''अमीर अमानुल्ला खान अवॉर्ड'' से अफगानिस्तान के राष्ट्रपति मो0 अशरफ गनी जी के द्वारा सम्मानित किया गया ।** इस परियोजना के उदघाटन पर जश्न, समारोहों व हेरात की गलियों में अफगानियों द्वारा दिखाए गए उत्साह से इस परियोजना की भव्यता तथा इससे उत्पन्न सदभावना प्रतिबिम्बित होती है। हेरात की गलियों और बांध स्थल पर माननीय प्रधानमंत्री के स्वागत और दोनों राष्ट्रों के मध्य शाश्वत मैत्री के प्रतीक के रूप में बांध के लिए भारत को धन्यवाद देने हेतु विशाल बैनरों से सजाया गया।

अफ़गानिस्तान के माननीय राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद अशरफ गनी परियोजना के उदघाटन के बाद परियोजना स्थल पर गए । राष्ट्रपति की विनम्रता इस बात से दिखाई देती है कि उन्होंने वाप्कोस कार्मिकों का उनके अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया और बातचीत की । यह बात दिल को छू गई कि अफ़गान राष्ट्रपति ने पूरी परियोजना कार्यान्वयन टीम को धन्यवाद दिया ।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और अफ़गानिस्तान के राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद अशरफ गनी बांध का उदघाटन करते हुए।

अफ़गान-भारत मैत्री बांध – 42 मेगावाट बिजली उत्पन्न करने की क्षमता, 75 हजार हेक्टेयर भूमि की सिंचाई, जलापूर्ति और अफ़गानिस्तान के लोगों के लिए अन्य लाभों हेतु बनाई गई एक बहुउद्देशीय परियोजना है। अफ़गानिस्तान के हेरात प्रांत में हरीरुद नदी पर बनी इस परियोजना का निष्पादन और कार्यान्वयन **"वाप्कोस लिमिटेड"** भारत सरकार का उपक्रम – जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा किया गया । यह विदेश मंत्रालय द्वारा निधिक है।

इस परियोजना में हरिरूद नदी के आर-पार 104.3 मी. ऊंचे, तल में 550 मी. लंबे एवं 450 मी. चौडे रॉक-फील बांध के निर्माण का कार्य किया गया । बांध की कुल क्षमता 633 मिलियन घनमीटर है। परियोजना में हाइड्रो मैकेनिकल (एच व एम), इलैक्ट्रो मैकेनिकल (ई व एम) संघटक, 3 नम्बर रेडियल गेट द्वारा नियंत्रित 36 मी. चौडा, 63 मी. ऊंचा कंक्रीट स्पीलवे, सतही पावर हाउस (36 मी. ऊंचा x 66 मी. लम्बा x 18.2 मी. चौड़ा), डायवर्जन सुरंग इत्यादि हैं । अफ़गानिस्तान के हेरात शहर को विद्युत पहुंचाने के लिए लगभग 157 कि.मी. की एक सिंगल सर्किट 110 केवी ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण किया गया ।

परियोजना स्थल हेरात प्रांत के एक सुदूर क्षेत्र में स्थित है और टूटी-फूटी 160 कि.मी. कच्ची सड़क द्वारा पास के व्यापारिक शहर हेरात से जुड़ा है । यह कच्ची सड़क भारतीय परियोजना अधिकारियों के लिए अफ़गानिस्तान सरकार द्वारा जनवरी 2011 से सरकार विरोधी असामाजिक तत्वों की उपस्थिति व सड़क पर माईन्स लगाए जाने के कारण बंद कर दी गयी थी। सभी भारतीय केवल हेलीकॉप्टर से परियोजना स्थल एवं हेरात आते-जाते थे जो अफ़गानिस्तान सरकार द्वारा समय-समय पर उपलब्ध करवाया गया । परियोजना के लिए सभी उपकरणों और सामग्री को समुद्र के माध्यम से भारत से ईरान के बंदर-ए-अब्बास बंदरगाह पर भेजा गया और वहां से सड़क मार्ग से 1200 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए ईरान-अफ़गानिस्तान की सीमा पर स्थित इस्लाम किला सीमा चौकी पहुंचाया गया और इसके पश्चात् सड़क मार्ग से 140 किलोमीटर की दूरी तय करके हेरात की सीमा चौकी पर भेजा गया फिर 160 कि.मी. की दूरी तय करके कच्ची सड़क द्वारा परियोजना स्थल तक पहुंचाया गया। सीमेंट, इस्पात सुदृढ़ीकरण, विस्फोटक आदि को अफ़गानिस्तान में पड़ोसी देशों से आयात किया गया ।

परियोजना का सफलतापूर्वक समापन 1500 भारतीय और अफ़गान अभियंताओं एवं अन्य उद्यमियों के द्वारा बेहद कठिन परिस्थितियों में की गई वर्षों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। बिगड़ते सुरक्षा हालात व परियोजना स्थल पर पहुंचने की बाधा के बावजूद भी परियोजना पर कुल प्रगति निम्न प्रकार हुई :

1. डैम, स्पीलवे, पावर हाउस तथा स्वीचयार्ड में 27.5 लाख क्यूबिक मीटर खुदाई कार्य पूरा किया गया ।

2. अर्थ एवं राकफिल डैम का 37.50 लाख क्यूबिक मीटर पूरा किया गया ।
3. स्पीलवे, पावर हाउस व स्वीचयार्ड हेतु 3.04 लाख क्यूबिक मीटर कंकरीटिंग का कार्य पूरा किया गया ।
4. 15970 मी. कंसोलिडेशन एवं करटेन ग्राउटिंग का कार्य डेम एवं स्लीपवे में पूरा किया गया ।
5. फेरूल्स के आस पास कंकरीटिंग व ग्राउटिंग कार्यों के साथ 523 मी. पेनस्टाक फेरूल्स बिछाए गए । इसके लिए 900 टन स्पेशल स्टील जापान से मंगवाया गया था।
6. 11 हाइड्रो मकैनिकल गेट्स तथा इसके 10 उत्थापन व्यवस्था एवं इलैक्ट्रो-मैकेनिकल उपकरण भारत से ईरान के द्वारा जहाज से भेजे गए ।
7. इलैक्ट्रो मैकेनिकल एवं हाइड्रो मैकेनिकल उपकरण स्पीलवे एवं पावर हाउस में कंकरीटिंग कार्य के साथ लगाये गए ।
8. इन्फ्रास्ट्रक्चर कार्य जैसे रोड़, बिल्डिंग इत्यादि का कार्य पूरा किया गया ।
9. 1

   10 केवी तथा 157 कि.मी. लम्बी ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण कार्य पूरा किया गया । इसमें 533 टावरों का उपयोग किया गया ।

श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस ने बहुत कठिन प्रतिकूल परिस्थितियों में इस परियोजना को पूरा करने की चुनौतियों का सामना करते हुए हमारा मार्ग प्रशस्त किया और सलमा बांध परियोजना को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया ।

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस द्वारा दिनांक 03.06.2016 को परियोजना स्थल दौरा

इस परियोजना का प्रबंधन नई दिल्ली के मुख्यालय में श्री अमर कुमार, मुख्य कार्यकारी निदेशक, वाप्कोस द्वारा किया गया । चिश्ते–ए-शरीफ वाप्कोस मुख्यालय में श्री ए.एन.एन. प्रसाद, कार्यकारी निदेशक, वाप्कोस ने इस परियोजना का कार्यान्वयन करके, हमारे संगठन के लिए गौरवपूर्ण कार्य किया ।

दिनांक 22 जून, 2016 को नई दिल्ली में सुश्री उमा भारती, माननीय केन्द्रीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री की अध्यक्षता में **''बधाई समारोह''** का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार व विशेष अतिथि इंजी. अली अहमद ओस्मानी, माननीय ऊर्जा व जल मंत्री, अफ़गानिस्तान सरकार के साथ मैडम मसूदा खरोकी, माननीय संसद सदस्या, हेरात प्रांतीय विधान सभा की माननीय सदस्य मैडम रामिश सोमैया एवं जनाब सैय्यद अजीम कबरजानी और श्री शैदा मौहम्मद अब्दाली, भारत में अफ़गानिस्तान के महामहिम राजदूत भी उपस्थित थे । बधाई समारोह में विभिन्न क्षेत्रों से 10 अफ़गान प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया ।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के विशेष सचिव श्री अमरजीत सिंह जी ने भी **वाप्कोस** के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की प्रशंसा करते हुए कहा की उनके गतिशील नेतृत्व में **वाप्कोस** सफलता के नए आयाम प्राप्त कर रहा है ।

इस अवसर पर फिल्म स्क्रीनिंग - अफ़गान-भारत मैत्री बांध पर **''सपना जो सच हुआ''** सफलता की कहानी पर फिल्म भी दिखाई गई । 'अफ़गान-भारत मैत्री बांध' पर निम्न पुस्तकों का विमोचन भी किया गया :

1. **''सपना जो सच हुआ''**
2. **''सदभावना का भण्डार''**

अफ़गानिस्तान के सभी गणमान्य अतिथियों, वाप्कोस के इंजीनियर्स एवं वाप्कोस से जुड़ी संस्थाओं के प्रमुखों को, जिनका परियोजना में अमूल्य योगदान रहा, को समृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया । अफ़गानिस्तान से आए हेरात प्रांत के सांसदों ने भी उपस्थित गणमान्य अतिथियों का सम्मान अफ़गानिस्तान की पारम्परिक शॉल भेंट देकर किया । इस अवसर पर इंजी. अली अहमद ओस्मानी ने श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस को अफ़गानिस्तान सरकार के राष्ट्रपति का प्रशंसा पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया ।

"अफ़गान-भारत मैत्री बांध के बधाई समारोह की झलकियां"

"अफ़गान-भारत मैत्री बांध के बधाई समारोह की झलकियां"

अफ़गानिस्तान के साथ भारत के सदियों पुराने रिश्तों का उल्लेख करते हुए **''केंद्रीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री माननीय सुश्री उमा भारती''** ने कहा कि अफ़गान-भारत मैत्री बांध दोनों देशों के बीच पारस्परिक विश्वास और सहयोग का एक ज्वलंत उदाहरण है । नई दिल्ली में आयोजित बधाई समारोह में बांध के सफल निर्माण में अपना योगदान करने वाले वाप्कोस लिमिटेड और अफ़गानिस्तान के कार्मिकों का अभिनंदन किया गया। मंत्री महोदया ने कहा कि इस बांध का निर्माण अत्यंत कठिन राजनीतिक और जलवायु परिस्थितियों में किया गया। वाप्कोस के कर्मचारियों और अफ़गान तकनीकी कर्मियों की निष्ठा की प्रशंसा करते हुए सुश्री भारती ने कहा, 'इन बहादुर लोगों ने एक असंभव काम को संभव बनाया' । माननीय मंत्री महोदया ने कहा कि मैं हर उस कार्मिक को प्रणाम करती हूं जिसका किसी भी रूप में इस बांध के कार्य को पूरा करने में योगदान रहा ।

समारोह की मुख्य अतिथि और **विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज** ने अफ़गानिस्तान को भारत के निरंतर सहयोग का आश्वासन देते हुए कहा कि भारत, अफ़गानिस्तान के साथ हमेशा एक चट्टान की तरह खड़ा रहेगा। आपकी आर्थिक समृद्धि और सुरक्षा को लेकर हमारी प्रतिबद्धता कायम है'। मंत्री महोदया ने जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के उपक्रम **वाप्कोस लिमिटेड** की सराहना करते हुए कहा कि **'वाप्कोस लिमिटेड'** ने अत्यंत ही कठिन परिस्थितियों में इस काम को समय से पहले सम्पन्न किया ।

वाप्कोस की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए **''अफ़गानिस्तान के ऊर्जा और जल मंत्री इंजीनियर अली अहमद ओस्मानी''** ने कहा कि यह बांध भारत के साथ मैत्री की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने अन्य देशों से अनुरोध किया कि वे भारत के सहयोग के इस मॉडल को अपनाएं। श्री ओस्मानी ने यह भी कहा कि भारत, बांध और ऊर्जा परियोजनाओं के क्षेत्र में अफ़गानिस्तान को मदद करने वाला पहला देश था । उन्होंने उम्मीद जताई कि दोनों देशों के बीच सहयोग का यह रिश्ता कायम रहेगा । अफ़गान मंत्री ने कहा, 'हमारी दोस्ती यह साबित करती है कि आतंकवाद विकास के पथ में बाधा नहीं बन सकता'।

समारोह के अंत में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस ने धन्यवाद प्रस्ताव देकर समारोह का समापन किया ।

अफ़गान-भारत मैत्री बांध केवल कंक्रीट व स्टील की संरचना ही नहीं है । इस सपने को साकार करने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर चले सैकड़ों भारतीय व अफ़गान कार्मिकों के परिश्रम व पसीने का समिश्रण भी है । आज हम भारत-अफ़गान रिश्ते और दोस्ती के साथ आगे बढ़े हैं । इस बांध के बनने से दोनों देशों के बीच सहयोग, सौहार्द व समृद्धि के नए अध्याय की शुरूआत हुई है। जो लोग गड़बड़ी और बर्बादी के रास्ते चलना चाहते हैं उसके विपरित हम दोनों देशों ने मिलकर निर्माण और विकास के रास्ते पर आगे बढ़ने का फैसला किया है ।

4th इण्डिया वाटर वीक 2016

इण्डिया वाटर पार्टनरशिप ने
इण्डिया वाटर वीक के दौरान 6 अप्रैल 2016 को नई दिल्ली
में जल संवाद फिल्म महोत्सव आयोजित किया ।

इण्डिया वाटर वीक जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय का भव्य वार्षिक आयोजन है । भारत सरकार ने इस आयोजन को 2012 से आरंभ किया । इस आयोजन का उद्देश्य बहुत से पणधारियों को उपलब्ध जल तथा प्राकृतिक संसाधन से संरक्षण, बचाव तथा इष्टतम प्रयोग हेतु मुख्य कार्यनीतियों के विचार विमर्श के लिए मंच उपलब्ध करवाना है ।

इण्डिया वाटर वीक-2016 का आयोजन 'सभी के लिए जल – एकजुट प्रयास' विषय पर 4 अप्रैल से 8 अप्रैल, 2016 तक किया गया । इस भव्य आयोजन का शुभारंभ तथा पूर्ण समारोह विज्ञान भवन, नई दिल्ली में किया गया जबकि अन्य आयोजन जैसे कि संगोष्ठियां, पैनल विचार विमर्श, प्रदर्शनियां, बौद्धिक सत्र इत्यादि प्रगति मैदान, नई दिल्ली में किए गए।

इण्डिया वाटर वीक - 2016 के आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवाओं सहित समाज के सभी क्षेत्रों से भागीदारी को बढ़ाना और जल संरक्षण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता पैदा करना भी है । इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए फिल्म व डाक्यूमेंटरी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फिल्में युवाओं और समुदायों को आकर्षित करने का अत्यंत महत्वपूर्ण, व्यवहार्य और रोमांचक माध्यम है ।

इण्डिया वाटर पार्टनरशिप ने सीएमएसआर फाउंडेशन, वाप्कोस लिमिटेड तथा इंटरनेशनल कमिशन ऑन इरिग्रेशन एण्ड ड्रेनेज (आईसीआईडी) के सहयोग से इण्डिया वाटर वीक-2016 के दौरान दिनांक 6 अप्रैल, 2016 को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में एक विशेष जल संवाद फिल्म महोत्सव का आयोजन किया जिसमें जल संरक्षण, प्रौद्योगिकी नवीकरण तथा जन भागीदारी की सफल कहानियों को दर्शाने वाली फिल्में व डॉक्यूमेंटरी दिखाई गई । इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य विश्व की जल समस्या विशेषतः भारत में जल समस्याओं पर जागरूकता बढ़ाना था । इस आयोजन का सार निम्नानुसार है :

इण्डिया वाटर वीक-2016 में जल संवाद फिल्म महोत्सव एक अनूठे प्रकार का आयोजन था । इस आयोजन में 250 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया । ईजराइल, नेपाल, बुरूंडी, जिम्बाब्वे, फिलीपिन्स तथा सिएरा लियोन से भी प्रतिनिधि उपस्थित थे ।

4th इण्डिया वाटर वीक 2016 की झलकियां

4th इण्डिया वाटर वीक 2016 की झलकियां

वाप्कोस
WAPCOS

इस फिल्मोत्सव में अपशेष जल प्रबंधन, जल संरक्षण, जल प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, सूखे पर सरकारी, गैर सरकारी संगठन, शहरी स्थानीय निकाय, पंचायतों, व्यक्तिगत संगठनों तथा व्यक्तियों के प्रयासों को दर्शाने वाली 14 फिल्में दिखाई गईं ।

डा. वीना खंडूरी, कार्यकारी सचिव-सह-समन्वयक, इण्डिया वाटर पार्टनरशिप और फिल्म महोत्सव समन्वयक ने जल संवाद फिल्म महोत्सव के लक्ष्य व उद्देश्यों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि यह फिल्म महोत्सव क्षेत्र में जल संसाधन प्रबंधन में सक्रिय व्यक्तियों तथा संगठनों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों को मान्यता देते हुए उनके नवीन विचारों और अंतदृष्टि को सांझा करने व उत्पन्न करने का अवसर प्रदान करता है । श्री नरेन्द्र यादव, निदेशक, सीएमएसआर फाउंडेशन ने सत्र विवरण तथा जल संवाद फिल्म महोत्सव के फोर्मेट के बारे में बताया।

प्रारम्भिक सत्र

श्री आर.के.गुप्ता अध्यक्ष, इण्डिया वाटर पार्टनरशिप व अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड ने माननीय अतिथियों का स्वागत किया। जल संवाद फिल्म महोत्सव का उदघाटन मुख्य अतिथि सुश्री उमा भारती, माननीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया जिसके बाद माननीय अतिथि सुश्री दोरजी छोडेन, माननीय मंत्री, निर्माण कार्य व मानव आवास मंत्रालय, शाही भूटान सरकार ने सम्बोधन दिया । इस सत्र में इण्डिया वाटर पार्टनरशिप द्वारा हाल ही में निर्मित गंगा नदी पर फिल्म 'गंग तरंग' दिखाई गई जिसमें गंगा के संरक्षण हेतु जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के प्रयासों को दिखाया है ।

सत्र । : जल संरक्षण

जल संरक्षण पर सत्र-1 की अध्यक्षता श्री निखिलेश झा, आईएएस, अपर सचिव व मिशन निदेशक, राष्ट्रीय जल मिशन, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय और संचालन श्री ए.बी.पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग, भारत सरकार तथा जूरी सदस्य, जल संवाद फिल्म महोत्सव द्वारा की गई थी ।

इस सत्र में चार फिल्म दिखाई गई :

- वेन एवरी ड्राप काउंट्स । रिशू निगम । अवधि – 00.14.44
- वाटर हार्वेस्टिंग फॉर क्लाइमेट रिसाइलिएंस –दि महाराष्ट्र स्टोरी । इन्स्टीट्यूट फार डेवलेपमैंट इनिशिएटिवस् एण्ड इण्डिया वाटर पार्टनरशिप । अवधि – 0:17:59
- वाटर फार लाइफ । धान फाउंडेशन । अवधि -0:17:17
- वाटर कंजरवेशन । नेशनल इन्स्टीट्यूट आफ हाइड्रलोजी । अवधि – 00:10:03

सत्र-2 : सभी के लिए स्वच्छ पेयजल

सत्र-2 की अध्यक्षता डा. अमिता प्रसाद, आईएएस, संयुक्त सचिव (प्रशा. व भूजल) द्वारा की गई। इस सत्र का संचालन श्री अविनाश चन्द्र त्यागी, क्षेत्रीय परिषद् सदस्य, जीडब्ल्यूपी-दक्षिण एशिया तथा महासचिव, इन्टरनेशनल कमिशन ऑन इरिग्रेशन एण्ड ड्रेनेज तथा जूरी सदस्य, जल संवाद फिल्म महोत्सव द्वारा की गई ।

इस सत्र में पांच फिल्में दिखाई गईं :

- दि जल सहेलिस आफ बुंदेलखंड । ऊषा देवानी । अवधि 0:06:34
- सोल्विंग दि वाटर प्रोब्लम । प्लान इण्डिया : तेजेन्द्र शर्मा : अवधि : 00.08.29
- स्वच्छ जल बेहतर कल । सोसाइटी फॉर डेवलेपमैंट अल्टरनेटिव । अवधि : 0:04:09
- सोल्विंग वाटर स्कारसिटी इन सलाइन ग्राउंड वाटर एरिया । एसएम सहगल फाउंडेशन। अवधि 0:1:00
- दि रिचुअल / सस्मित वसंत गड़कर । अवधि – 00:02:40

समापन सत्र

समापन अभिभाषण में सम्मानीय अतिथि प्रो. सांवर लाल जाट, माननीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिया गया जिसके बाद डा. अमन शर्मा, महासचिव, इण्डिया वाटर पार्टनरशिप तथा कार्यकारी निदेशक, गंगा संरक्षण व पर्यावरण, वाप्कोस लिमिटेड ने अपनी टिप्पणियां दी । इस सत्र में चार फिल्में दिखाई गई :

- जल खेत । अंजलि नायर । अवधि – 0:25:00
- वाटर आन मून वट एबाउट दि अर्थ । इण्डिया वाटर पार्टनशिप व इन्स्टीट्यूट फॉर डेवलेपमैंट इनिशिएटिवस् । अवधि - 0:9:12
- इको फ्रैंडली वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट फेसिलिटी । कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय । अवधि – 00:14:47
- जीडब्ल्यूपी 20 – जॉयन अस । ग्लोबल वाटर पार्टनरशिप । अवधि – 0:2:00

निष्कर्ष

इण्डिया वाटर वीक के दौरान जल संवाद फिल्म महोत्सव के आयोजन की मुख्य अतिथि, माननीय अतिथियों व सभी प्रतिभागियों द्वारा भूरी भूरी प्रशंसा की गई ।

शिकागो में स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा दिया गया भाषण

स्वामी विवेकानन्द
11 सितम्बर, 1893

हम आपके साथ स्वामी विवेकानन्द द्वारा 1893 में धर्म संसद, शिकागो में हिन्दी में दिए गए प्रेरणास्पद भाषण को साझा कर रहें हैं। ये वही भाषण है जिसने स्वामी जी की ख्याति पूरे विश्व में फैला दी थी और धर्म संसद में हिंदुत्व और भारत का परचम लहरा दिया था ।

अमेरिकी बहनों और भाईयों

आपके इस स्नेहपूर्ण और जोरदार स्वागत से मेरा हृदय अपार हर्ष से भर गया है । मैं आपको दुनिया के सबसे पौराणिक भिक्षुओं की तरफ से धन्यवाद देता हूं, मैं आपको सभी धर्मों की जननी की तरफ से धन्यवाद देता हूं और मैं आपको सभी जाति-संप्रदाय के लाखों करोड़ों हिन्दुओं की तरफ से भी धन्यवाद देता हूं । मेरा धन्यवाद उन वक्ताओं को भी जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है । मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं जिसने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है । हम सिर्फ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं, मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से हूं जिसने इस धरती के सभी देशों के सताए गए लोगों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इजराइलियों की शुद्धतम स्मृतियां बचाकर रखी हैं जिनके मंदिरों को रोमनों ने तोड़-तोड़ कर खंडहर बना दिया और तब उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली । मुझे इस बात का गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं जिसने महान पारसी देश के अवशेषों को शरण दी और अभी भी उन्हें बढ़ावा दे रहा है। भाइयों मैं आपको एक श्लोक की कुछ पंक्यिां सुनाना चाहूंगा जिसे मैंने बचपन से स्मरण किया और दोहराया है, और जो रोज करोड़ों लोगों द्वारा हर दिन दोहराया जाता है । जिस तरह से विभिन्न धाराओं की उत्पत्ति विभिन्न स्रोतों से होती है उसी प्रकार मनुष्य अपनी इच्छा के अनुरूप अलग-अलग मार्ग चुनता है, वो देखने में भले ही सीधे या टेढ़े-मेढ़े लगे पर सभी भगवान तक ही ले जाते हैं ।

वर्तमान सम्मेलन, जो कि आज तक की सबसे पवित्र सभाओं में से है, स्वयं गीता में बताए गए एक सिद्धांत का प्रमाण है, ''जो भी मुझ तक आता है, चाहे किसी भी रूप में, मैं उस तक पहुंचता हूं, सभी मनुष्य विभिन्न मार्गों पर संघर्ष कर रहे हैं जिसका अंत मुझ में है।'' साम्प्रदायिकता, कट्टरता और इसके भयानक वंशज, हठधर्मिता लम्बे समय से पृथ्वी को अपने

शिकंजों में जकड़े हुए है । इन्होंने पृथ्वी को हिंसा से भर दिया है, कितनी बार ही ये धरती खून से लाल हुई है, कितनी ही सभ्यताओं का विनाश हुआ है और कितने देश नष्ट हुए हैं ।

अगर ये भयानक राक्षस नहीं होते तो आज मानव समाज कहीं ज्यादा उन्नत होता, लेकिन अब उनका समय पूरा हो चुका है, मुझे पूरी उम्मीद है कि आज इस सम्मेलन का शंख नाद सभी हठधर्मिता, हर तरह के क्लेश, चाहे वो तलवार से हो या कलम से, और हर एक मनुष्य, जो एक ही लक्ष्य की तरफ बढ रहे हैं, के बीच की दुर्भावनाओं का विनाश करेगा ।

आम आदमी

एक बार प्रसिद्ध विद्वान हजरत अबू बकर सिद्दिकी को मदीना का वजीर नियुक्त किया गया । नियुक्ति के बाद प्रश्न यह उठा कि इनते बड़े विद्वान की तनख्वाह कितनी हो । वहां के बादशाह भी कोई निर्णय नहीं ले सके । काफी देर माथापच्ची करने के बाद अंत में यह निर्णय हुआ कि उनसे पूछ कर ही उनका वेतन तय किया जाए । बादशाह स्वयं उनके पास गए और उनके सामने अपनी समस्या रखी। अबू बकर ने कहा, 'जहांपनाह' यह तो कोई समस्या है नहीं । मैं कोई जनता से अलग तो हूं नहीं । बताइए, मदीना का एक औसत मजदूर महीने में कितना कमा लेता है ?' बादशाह ने कहा, 'तकरीबन एक दीनार तो कमा ही लेता है ।' अबू बकर ने कहा, 'ठीक है, मेरी तनख्वाह एक दीनार रखी जाए ।' बादशाह हैरत में पड़ गए । बोले, क्या कहा आपने? एक दीनार ! इससे ज्यादा तो मेरा नौकर कमाता है। आपकी बराबरी एक नौकर से नहीं हो सकती।' अबू बकर ने कहा कि आप मेरी बात नहीं समझ रहे हैं। आपने मुझे मुल्क का वजीर इसलिए बनाया है कि मैं यहां की गरीब जनता के हित में काम करूं । देश को तरक्की पर ले जाऊं । लेकिन जब मुझे यहां के आवाम के दर्द का पता ही नहीं चलेगा तो मैं कैसे उनके हित की बात सोचूंगा । एक मजूदर के बराबर तनख्वाह लेने से मुझे इतना तो पता रहेगा कि यहां साधारण लोग किस हाल में रहते हैं। वे अपना गुजर-बसर किस तरह से करते हैं और उनकी भलाई कैसे हो सकती है । हमारी तनख्वाह ज्यादा होगी तो हमें पता ही नहीं चलेगा कि देश में क्या हो रहा है।' बादशाह ने फिर जोर देकर कहा कि 'यह नियम के खिलाफ होगा । आपकी तनख्वाह एक मजदूर के बराबर नहीं हो सकती ।' अबू बकर ने मुस्कराकर कहा, 'फिक्र मत करिए । मैं हमेशा कोशिश करता रहूंगा कि यहां के मजदूरों की आमदनी जल्दी-जल्दी बढ़ती रहे। इससे मेरी तनख्वाह अपने आप बढ़ती जाएगी ।' यह सुनकर बादशाह निरूत्तर हो गए । उन्होंने शाही खर्च में भारी कटौती कर दी ।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), गुड़गांव के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव के अध्यक्ष कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड सहित निम्नलिखित 09 सदस्य कार्यालयों के साथ दिनांक 26.05.2016 को दिल्ली में विचार-विमर्श किया गया :-

1. वाप्कोस लिमिटेड
2. बीएसएनएल
3. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
4. एचपीसीए
5. यूनाइटेड इंश्योरेंस कम्पनी
6. राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड
7. एलपीजी बाटलिंग प्लांट, इन्डेन बाटलिंग प्लांट
8. कर्मचारी राज्य बीमा निगम
9. खाद्य सुरक्षा संस्थान
10. पुलिस उप महानिरीक्षक, सी.आर.पी.एफ.

सर्वप्रथम श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव द्वारा माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया गया ।

स्वागत के पश्चात अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री आर. के. गुप्ता ने अपना संक्षिप्त अभिभाषण दिया । तदुपरांत सभी उपस्थति सदस्य कार्यालय प्रमुखों द्वारा अपना-अपना संक्षिप्त परिचय दिया गया । इसके उपरांत समिति सदस्यों के विधिवत् परिचय के साथ ही विचार-विमर्श कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ ।

विचार विमर्श-कार्यक्रम के दौरान माननीय समिति के उपाध्यक्ष महोदय तथा सदस्यों द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों के साथ निरीक्षण प्रश्नावली की सभी मदों पर विस्तार से चर्चा की गई। चर्चा के दौरान समिति सदस्यों द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों को अपने-अपने कार्यालयों में निम्नलिखित मदों पर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दियेः-

- सभी कार्यालय प्रमुख नराकास की वर्ष में आयोजित होने वाली दोनों बैठकों में स्वयं उपस्थित रहें ताकि परस्पर सहयोग व समन्वय से राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाया जा सके।
- धारा 3(3) का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।
- चूंकि गुड़गांव ''क'' क्षेत्र में स्थित है और ''क'' क्षेत्र हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में हिन्दी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य 100% है। अतः नराकास, गुड़गांव के सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा हिन्दी पत्राचार के निर्धारित लक्ष्य 100% को प्राप्त किया जाए।
- सभी कार्यालय प्रति वर्ष 4 हिन्दी कार्यशालाएं नियमित रूप से आयोजित करें।
- प्रवीणता प्राप्त सभी कार्मिक अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करें।

- कार्यालयों में उपलब्ध क्षमता के अनुपात में कम्प्यूटरों पर राजभाषा हिन्दी में काम करने का अनुपात कम नहीं होना चाहिए।
- कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्य अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करें।
- सभी रजिस्टरों/सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां हिन्दी में की जाएं।
- वरि.अधिकारी स्वयं हिन्दी में काम करने का प्रयास करें ताकि उनके अधीनस्थ कार्मिकों को भी हिन्दी में काम करने की प्रेरणा मिल सके।

उपरोक्त विचार-विमर्श कार्यक्रम में उक्त सभी कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों द्वारा भाग लिया गया। **इस विचार-विमर्श कार्यक्रम में वाप्कोस से निम्नलिखित अधिकारी उपस्थित थे :-**

1. श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव
2. श्री अमर कुमार, मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, वाप्कोस लिमिटेड
3. श्रीमती निम्मी भट्ट, उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव

इस पूरे विचार-विमर्श कार्यक्रम का समन्वय कार्य वाप्कोस को सौंपा गया था। माननीय समिति सदस्यों द्वारा वाप्कोस द्वारा किये गए समन्वय कार्य की प्रशंसा की गई।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबन्धक (रा.भा.का.)

क्या टूटी हड्डियां जुड़ सकती हैं?

साभार : मानव जगत के रोचक रहस्य

खेल के मैदान में अथवा किसी भी हादसे के कारण जब हमारी कोई हड्डी टूट जाती है तो उसे जोड़ने के लिए डॉक्टरों द्वारा प्लास्टर चढ़ाया जाता है और कुछ समय बाद टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है । लेकिन क्या आप जानते है कि टूटी हुई हड्डी किस प्रकार जुड़ जाती है । हड्डियों का टूटना निम्न प्रकार से हो सकता है –

1. साधारण अस्थि भंग - इसमें टूटी हड्डी के दोनों सिरे अपनी जगह ही रहते हैं और चारों ओर के भाग को अधिक नुकसान नहीं पहुंचता ।
2. हड्डी का ऐसा टूटना कि टूटी हड्डी की नोक दूसरा घाव कर दें इसमें हड्डी त्वचा से बाहर निकल आती है ।
3. हड्डी का ऐसा टूटना जिसमें उसके कई टुकड़े हो जाएं ।
4. समघात अस्थि भंग – इसमें हड्डी के सिरे टूट कर एक दूसरे से रगड़ जाते हैं ।
5. आंशिक अस्थि भंग – इसमें हड्डी का केवल एक सिरा ही टूटता है और दूसरा सिरा जुड़ा रहता है ।

हड्डी टूटने से उस स्थान के चारों ओर जलन तथा अत्यधिक पीड़ा होती है, हड्डी टूटने पर प्रायः पहले डाक्टर उसे ठीक स्थान पर बैठाता है और उस अंग के चारों ओर प्लास्टर लगा दिया जाता है ताकि हड्डी जुड़ जाए । हड्डी जुड़ने की प्रक्रिया उस समय से सुचारू हो जाती है जब टूटी हुई रक्त वाहिनी नली से बहता हुआ खून जमना प्रारम्भ करता है ।

कुछ दिनों बाद हड्डी के दोनों टूटे हुए सिरे कोमल हो जाते हैं और उनके बीच की जगह में ऐसा चिपचिपा द्रव भरना शुरू हो जाता है जिसमें हड्डी बनाने वाले कोष होते हैं । दो या तीन सप्ताह में हड्डी के टूटे हुए सिरों के बीच का संधिस्थल कोमल हड्डी के नए कोशों से भर जाता है । यह धीरे-धीरे कठोर रूप लेने लगता है ।

अस्थिभंग को पूरी तरह ठीक होने में कई महीने लग सकते हैं । इसके लिए एकमात्र आवश्यकता यह होती है कि हड्डी के टूटे सिरों को अपने सही स्थान पर कई सप्ताह तक रखा जाए । इसलिए हड्डी टूटे हुए अंग के चारों ओर प्लास्टर चढ़ा दिया जाता है और घायल व्यक्ति को उस अंग को हिलाने-डुलाने से मना कर दिया जाता है । वृद्ध लोगों की हड्डियां कमजोर पड़ जाती हैं और मामूली-सी चोट से टूट सकती हैं, जबकि बच्चों की हड्डियां कोमल होती हैं और छोटी-मोटी चोट से टूटती नहीं ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव के तत्वावधान में वाप्कोस द्वारा ''गुगल वाइस व यूनीकोड'' पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) गुड़गांव, की नवगठित समिति की दिनांक 01.02.2016 को श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 के उप निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा अध्यक्ष, नराकास, गुड़गांव से अनुरोध किया गया था कि वाप्कोस द्वारा ''गुगल वाइस व यूनीकोड'' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए ताकि सदस्य कार्यालयों के अधिक से अधिक कामिक हिन्दी में काम कर सके।

उक्त अनुपालनार्थ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), गुड़गांव के तत्वावधान में दिनांक 21.6.2016 को वाप्कोस द्वारा ''गुगल वाइस व यूनीकोड'' पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में नराकास, गुड़गांव के सभी सदस्य कार्यालयों से हिन्दी अधिकारियों व वाप्कोस के कुछ अधिकारियों को आमंत्रित किया गया था ताकि वह गुगल वाइस पर प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने-अपने कार्यालयों के अन्य कार्मिकों को भी प्रशिक्षित कर सकें और वह कार्मिक भी अपने कार्यालय का काम आसानी से हिन्दी में कर सके ।

इस हिन्दी कार्यशाला में लगभग 48 कार्मिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से श्री केवल कृष्ण, वरि.निदेशक (तकनीकी) को आमंत्रित किया गया था जिन्होंने हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को गुगल वाइस द्वारा हिन्दी में काम करने का प्रशिक्षण ओर यूनीकोड से संबंधित जानकारी दी। उपस्थित कार्मिकों ने वाप्कोस द्वारा ''गुगल वाइस व यूनीकोड'' पर आयोजित इस हिन्दी कार्यशाला की काफी सराहना की तथा वरि.निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिये गए प्रशिक्षण की भी काफी प्रंशसा की । इस कार्यशाला का संचालन उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव, नराकास, गुड़गांव द्वारा किया गया।

(गीता शर्मा)
वरि. अनुवादक

कविता – स्कूल डेज़

चन्द्रकांता
कार्यालय प्रबंधक

वो बड़े नाखूनों को दातों से चबाना,
लेट आने पर, मैदान के चक्कर लगाना
वो प्रार्थना के समय क्लास में ही रुक जाना
पकड़े जाने पर पेट दर्द का बहाना बनाना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

कमीज के बटन ऊपर नीचे लगाना
वो अपने बाल खुद न बना पाना
स्कर्ट की पलेट ठीक करते जाना
पीटी शूज़ को चाक से चमकाना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

वो पत्थर के टुकड़े को फुटबाल बनाना
ठोकर मार-मार उसे घर तक ले जाना
साथी के बैठने से पहले बेंच सरकाना
और उसके गिरने पर जोर से खिलखिलाना

गुस्से से एक दूसरे की, कमीज पर स्याही छिडकाना
वो लीक करते पैन को, बालों से पोंछते जाना
बाथरूम में सुतली बम पर आग लगा कर छुपाना
और उसके फटने पर कितना मासूम बन जाना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

वो फ्री पीरियड में शोर मचाना
S.U.P.W. की मैडम से बहाने बनाना
वो कागज की किश्ती वो बारिश का पानी
वो सखा सहेली वो यादें पुरानी
K.V. की यादों में खो जाना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

वो बेर वाली के बेर चुपके से चुराना
लाल काला चूरन खा कर एक दूसरे को दिखाना

चटनी वाली मूली के लिए लार टपकाना
बन्टे वाली बोतल पीते जाना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

वो लंच से पहले टिफिन चट कर जाना
वो अचार की खुशबू पूरी क्लास में फैलाना
वो पानी पीने में जमकर देर लगाना
वो मॉनिटर बन सारी क्लास पर रोब जमाना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

वो Exam से पहले मैडम के चक्कर लगाना
लगातार बस Important ही पूछते जाना
वो उनका पूरी किताब Important बताना
और हमारा ढ़ेर सारे कोर्स को देख सर चकराना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

वो अंग्रेजी की मैडम का गुस्सा
वो संस्कृत की क्लास का किस्सा
वो मैथस् के सर का चोक मार कर उठाना
वो Back Benches कहलाना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

वो फेयरवैल पार्टी में पेस्ट्री समोसे खाना
वो म्यूजिक वाली मैडम का गाना सुनना
वो टाइटल मिलने पर हमारा शर्माना
वो भीगी पलकों से मुस्कुराना
कितना मस्त मौला था वो, बचपन सुहाना।

ऐ मेरे स्कूल मुझे फिर से तो बलाना

वो मेरे स्कूल का मुझे यहां तक पहुंचाना
और मेरा खुद में खो, उसको भूल जाना
बाजार में किसी परिचित से टकराना
वो जवान सी मैडम का बूढा चेहरा सामने आना
हमारा फिर गुजरी यादों में खो जाना
हर उस पल, हर बात का ताजा हो जाना
मुमकिन हो तो तुम सब अपने स्कूल एक बार जरूर जाना ।

शिक्षण का माध्यम हो मातृभाषा : गांधी जी

\- महात्मा गांधी

मैं हाई स्कूल में भरती हुआ । वहां पहले तीन साल तो मेरी मातृभाषा – गुजराती में पढ़ाई हुई । लेकिन शिक्षकों का प्रधान काम छात्रों के दिमाग में किसी तरह अंग्रेजी ठूंस-ठूंसकर भरने का ही था। फलस्वरूप हमारा आधे से भी ज्यादा समय तो अंग्रेजी की पढ़ाई में और उसके किसी भी प्रकार के नियम के अधीन नहीं, ऐसे उच्चारण सीखने में ही बरबाद होता था ।

जो भाषा जैसी लिखी जाती है, वैसी बोली जाती नहीं, ऐसी भाषा सीखनी पड़ेगी, यह सुनते ही भारी दुख हुआ । शब्दों के स्पेलिंग' रटने का मेरा अनुभव यह पहला ही था । चौथे साल से तो मुसीबत ही मुसीबत थी। भूमिति, बीजगणित, रसायनशास्त्र, खगोलशास्त्र, इतिहास, भूगोल आदि सारे विषय अंग्रेजी के माध्यम से ही सिखाए जाने लगे। अंग्रेजी का आक्रमण इतना भारी था कि संस्कृत और फारसी भी, मातृभाषा के माध्यम से नहीं, किन्तु अंग्रेजी के माध्यम से ही सीखनी पड़ती थी । कोई छात्र वर्ग में यदि अपनी मातृभाषा गुजराती में बोलता तो उसे सजा सहनी पड़ती थी । कोई छात्र यदि बिल्कुल ही अशुद्ध अंग्रेजी बोलता अथवा सही उच्चारण न करता, तो कोई बात नहीं, शिक्षक को उसकी परवाह नहीं थी क्योंकि शिक्षक की भी यही हालत थी । हम लोगों को, छात्रों को, कुछ ऐसी बातें भी रटनी पड़ती थीं जो कि हम लोग बिल्कुल समझाने की कोशिश करते थे, उस वक्त तो मेरा दिमाग ही चकरा जाता था । इतना तो कबूल करता हूं कि मेरी अपनी मातृभाषा गुजराती पर गहरा प्रेम होते हुए भी भूमिति, बीजगणित आदि के पर्यायवाचक गुजराती शब्द आज भी नहीं जानता । मैं अब समझा हूं कि यदि मुझे भूमिति, बीजगणित, रसायनशास्त्र एवं खगोलशास्त्र का जितना अंश सीखने में चार साल लगे, उतना अंश, अंग्रेजी के माध्यम से नहीं, किन्तु मातृभाषा के माध्यम से यदि सिखलाया होता तो बहुत आसानी से उतना एक ही साल में सीख लेता, इसमें कोई संदेह नहीं और उस ज्ञान का उपयोग मैं अपने घर में भी कर पाता ।

अंग्रेजी के द्वारा की गई पढ़ाई के कारण ही मैं पारिवारिक सदस्यों के बीच, पहाड़-सा अंतराल रूप बन गया था। मैं क्या करता था, क्या पढ़ता था, मेरे पिताजी कुछ नहीं जानते थे । मैं जो पढ़ता था, उसमें मैं अपने पिताजी को रस पैदा कराने की मेरी यदि इच्छा भी होती, तो भी मैं कुछ नहीं कर पाता । क्योंकि उनकी बुद्धि तीव्र होते हुए भी वे अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं जानते थे । मैं अपने घर में ही पराया बनता जा रहा था । ''मैं दूसरों से कुछ कहता हूं'' ऐसा बनता जा रहा था । मेरा रहन-सहन और मेरी वेशभूषा आदि कई विषयों में मेरा पूरा परिवर्तन होता जा रहा था । मेरे बारे में जो कुछ हुआ, यह कोई असाधारण अनुभव नहीं था । मेरे जैसे अनेक छात्रों की उस वक्त यही हालत थी। हाईस्कूल के मेरे प्रारम्भिक तीन सालों में मेरे ज्ञान में कोई विशेष अभिवृद्धि नहीं हुई। ये तीन वर्ष तो विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय अंग्रेजी द्वारा सीखने योग्य बनाने

के लिए ही थे, मानो पूर्व तैयारी के लिए ही थे । उस वक्त ''हाईस्कूल'' तो अंग्रेजी संस्कृति के विजय की एक सूचक थी । हमारी हाईस्कूल के करीब 300 छात्रों का ज्ञान उनकी अपनी सम्पत्ति-सा हो गया था । वह आम जनता को बांटने योग्य नहीं था । हमें अंग्रेजी गद्य की एवं पद्य की अनेक पुस्तकें पढ़ाई गई थीं । यह बेशक अच्छा ही था, लेकिन यह ज्ञान जन समूह की सेवा करने के काम में और जनसमूह का सम्पर्क करने में बिल्कुल निरूपयोगी रहा। मैंने जो अंग्रेजी गद्य-पद्य सीखा, वह यदि न सीखा होता, तो ''मैंने कुछ अमूल्य-सा विरल चीज गंवाई है'' ऐसा मैं महसूस नहीं करता। उसके बदले यदि ये सात साल मैंने अपनी मातृभाषा गुजराती की पढ़ाई में बिताए होते एवं अथवा गणित, विज्ञान, संस्कृत आदि सारे विषय गुजराती माध्यम से सीखे होते तो मैं अपना ज्ञान अपने पड़ोसियों को आसानी से बांट सकता । संभव है मैंने गुजराती भाषा की समृद्धि में वृद्धि की होती और एकाग्रतापूर्वक काम करने की मेरी आदत द्वारा मैं जनसमूह की सेवा में विशेष सहयोग दे पाता ।

मैं अंग्रेजी भाषा को एवं अंग्रेजी साहित्य को निम्न कक्षा का कहना नहीं चाहता। मुझे अंग्रेजी भाषा एवं उसके साहित्य के प्रति कितना अनुराग है, यह आप मेरी अंग्रेजी पत्रिका 'हरिजन' द्वारा समझ सकते हैं । लेकिन इंग्लैंड की समशीतोष्ण हवा एवं वहां के सुहावने नैसर्गिक दृश्य जिस तरह भारतीय जनता के लिए निरर्थक हैं, बिल्कुल उसी तरह इंग्लैंड का साहित्य, भारतीय आम जनता के लिए अनुपयोगी है । भारत की जलवायु, भारत के नैसर्गिक दृश्य, भारत का साहित्य इंग्लैंड से माने निम्न कोटि के हैं, फिर भी हमें अपनी ही जलवायु से संतोष, समाधान और अपने ही साहित्य द्वारा विकास करना है । हमें और हमारे बच्चों को अपनी ही जमीन पर अपनी इमारत खड़ी करनी है। हम विदेशी खाना खाकर सभी हृष्ट-पुष्ट नहीं हो सकते ।

अंग्रेजी भाषा ही से क्यों । विश्व की अन्य भाषाओं से भरे हुए रत्नभंडार भी हमारा देश अपनी भाषाओं द्वारा प्राप्त करें ऐसा मैं चाहता हूं । श्री रविन्द्रनाथ की अप्रतिम कृतियों का रसास्वाद लेने के लिए मुझे बंगाली भाषा सीखनी आवश्यक नहीं मैं उन्हें अनूदित कृतियों द्वारा प्राप्त कर सकता हूं । टॉलस्टाय कहानियों का रसास्वाद लेने के लिए मुझे या अन्य लोगों को रशियन भाषा सीखने की आवश्यकता नहीं, वे अच्छे अनुवाद के द्वारा ले सकते हैं। अंग्रेज संवर्ग यह कहते हैं कि विश्व की किसी भी भाषा में प्रसिद्ध हुए साहित्य को हम एक ही सप्ताह में सरल अंग्रेजी में प्रजा के सामने रख देते हैं। शेक्सपियर, मिल्टन आदि प्रसिद्ध लेखकों ने जो सोचा, जो लिखा उसके सर्वोत्तम अंश जानने और पढ़ने के लिए मुझे अंग्रेजी भाषा सीखनी ही चाहिए ऐसा नहीं है। विश्व की विविध भाषाओं में लिखा गया और सीखने योग्य जो साहित्य है उसे पढ़कर अपनी भाषा में अनूदित करके समाज के सामने रखना, यही जिनका व्यवसाय है, ऐसे लोगों की, छात्रों की एक अलग कक्षा करें, इससे न केवल देश के द्रव्य की, अपितु जनता के समय एवं शक्ति की बचत होगी ।

हमारे राजकर्ताओं ने गलत तरीका अपनाया है। फलस्वरूप हमने भी अच्छा मार्ग छोड़कर गलत राह पकड़ ली ।

सुरक्षा हेतु दीर्घकालीन उपाय

साभार :

भूकंपों से होनेवाली हानि की रोकथाम के लिए अथवा उसे कम-से-कम करने के लिए कुछ दीर्घकालीन उपाय भी आवश्यक होते हैं। वैसे उपाय चाहे दीर्घकालीन हों अथवा लघुकालीन उनके कार्यान्वयन हेतु किसी को उत्तरदायी बनाना जरूरी होता है। इसके लिए कानून बनाने जरूरी होते हैं। हम इस विषय में भी जापान का उदाहरण दे सकते हैं। यद्यपि इन उपायों को किसी भी संस्था द्वारा कार्यान्वित किया जा सकता है, परंतु कानून बनाने और उनका पालन कराने का काम तो सरकार ही कर सकती है।

जापान में भूकंप आपदा का सामना करने हेतु तोक्यो महानगर प्रशासन ने सितंबर 1971 में एक विशिष्ट भूकंप आपदा रोकथाम अध्यादेश लागू किया था। इस अध्यादेश को काफी खोजबीन के बाद और भूकंप वैज्ञानिकों से गंभीर विचार-विमर्श के बाद लागू किया गया था। इसमें भूकंप से होनेवाली हानि की रोकथाम के लिए हर संबंधित संस्था/व्यक्ति की जिम्मेदारी स्पष्ट रूप से बताई गई थी। उनकी इन जिम्मेदारियों का संबंध केवल भूकंप के दौरान और उसके बाद किए जाने वाले राहत कार्यों से ही नहीं था, वरन् तत्संबंधी दीर्घकालीन उपायों से भी था।

इस अध्यादेश के अनुसार तोक्यो महानगर प्रशासन को किसी भी क्षेत्र में मकान निर्माण रोकने अथवा कुछ विशेष प्रकार की इमारतों को न बनने देने तथा हानिकर और विषैली वस्तुओं के भंडारण-रोकथाम आदि विषयों पर निर्णय लेने का अधिकार है।

घनी आबादी वाले शहरों को भूकंप से सुरक्षित रखने के लिए एक दीर्घकालीन योजना बनाना जरूरी है। यद्यपि देहातों और कस्बों की सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है जितनी शहरों की, परंतु उनके लिए योजना शहरी योजना से भिन्न होनी चाहिए। महानगर भूकंप सुरक्षा योजना दो प्रकार की हो सकती है : (क) भूकंप-सुरक्षित नए नगरों के निर्माण की योजना और (ख) मौजूदा शहरों को भूकंप-सुरक्षित बनाने हेतु उनका पुनर्वास।

यह निश्चित है कि किसी भी शहर को भूकंप-सुरक्षित बनाने के लिए उसे एकदम उजाड़कर फिर से नहीं बसाया जा सकता। यह एक असंभव कार्य है। इसलिए शहर की बसावट में आवश्यक संशोधन करके उसकी इमारतों तथा अन्य संरचनाओं को भूकंप-प्रतिरोधी बनाने के प्रयत्न अवश्य किए जा सकते हैं। ऐसा करने के लिए भी सरकार को वर्तमान कानूनों में आवश्यक संशोधन करने अथवा नए कानून बनाने पड़ सकते हैं। वैसे आवासीय मकानों को भारतीय मानक ब्यूरो (ब्यूरो आफ इंडियन स्टैंडर्ड्स) के मानकों (इनके बारे में विस्तार से अन्यत्र पढिए) के अनुसार, मकानों को भूकंप-प्रतिरोधी बनाने की जिम्मेदारी उनके मालिकों की है, परंतु सरकारी इमारतों,

यथा-पुलिस स्टेशन, रेलवे स्टेशन, सरकारी कार्यालय, शिक्षण संस्थान आदि के भवनों के संबंध में यह कार्य सरकार को ही करना होगा।

यहां इस बात को पुनः दोहराना उपयुक्त होगा कि किसी भी इमारत/संरचना को पूर्णरूप से भूकंप-सह्य नहीं बनाया जा सकता। उसे भूकंप-प्रतिरोधी ही बनाया जा सकता है, जिससे भूकंप के दौरान उसे कम-से-कम हानि पहुंचे। अन्य संरचनाएं, जिनको भूकंप से सुरक्षा प्रदान करने के लिए दीर्घकालीन उपाय करने जरूरी होते हैं, वे हैं : राष्ट्रीय राजमार्ग, रेलवे मार्ग, जल-आपूर्ति व्यवस्था, संचार साधन आदि। राष्ट्रीय राजमार्गों तथा अन्य सड़कों को बनाते समय ऐसी निर्माण सामग्री तथा तकनीकें इस्तेमाल की जानी चाहिए कि वे भूकंपों के भीषण झटकों को भी सहन कर सकें। राजमार्गों पर बने पुलों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि भूकंप के दौरान पुलों के टूट जाने अथवा क्षतिग्रस्त हो जाने से संपूर्ण यातायात ही ठप हो सकता है।

उपर्युक्त बात रेलमार्ग पर भी लागू होती है, जहां एक ओर रेल की पटरियां बिछाने में ऐसी सामग्री और विधि इस्तेमाल की जानी चाहिए, जिससे भूकंप के कारण उन्हें कम-से-कम हानि हो, वहां दूसरी ओर भूकंप के दौरान रेलगाडियों के आवागमन को एकदम बंद कर देना चाहिए।

भूकंप के कारण धरती के धंस जाने अथवा इमारतों की दीवारों/स्तंभों के गिर जाने से जल-आपूर्ति करने वाले पाइप टूट जाते हैं। फलस्वरूप आबादी में पानी भरने लगता है और उसके डूबने का खतरा पैदा हो जाता है। साथ ही लोगों को अपने दैनिक उपयोगों के लिए पानी नहीं मिल पाता। कभी-कभी तो भूकंप के कारण गैस पाइप फट जाने अथवा अन्य कारणों से लगी आग को बुझाने के लिए भी पानी नहीं मिल पाता। 1923 मे कांतो(जापान) में आए भूकंप के दौरान ऐसा ही हुआ था। उसके कारण हुए अग्निकांड से ही अधिकांश लोगों की मृत्यु हुई थी। इन दुर्घटनाओं से बचने के लिए जल-आपूर्ति हेतु इस्पात अथवा किसी अन्य तन्य(डक्टाइल) वस्तु के पाइपों का इस्तेमाल उपयुक्त रहता है।

भूकंप के कारण अकसर ही बिजली के तार टूट जाते हैं। इससे अन्य अनेक कठिनाइयों के साथ-साथ संचार माध्यम भी एकदम ठप हो जाते हैं, इसलिए सावधानी के लिए अतिरिक्त इलेक्ट्रिक जनरेटर और स्टोरेज बैटरी रखना उपयुक्त रहता है। इनकी सहायता से आपातकाल में भी, बेतार उपकरणों की मदद से, बाहरी जगत् से संपर्क बनाए रखा जा सकता है।

अग्निकांड की रोकथाम

भूकंप के कारण आग लगने की घटनाओं को किसी भी उपाय से जल्दी से जल्दी रोकना जरूरी होता है। घरों को अग्निकांड से बचाने के लिए जल रहे गैस स्टोवों, बिजली के हीटरों, कोयले की अंगीठियों को भूकंप आते ही तुरंत बुझा देना चाहिए। इस संबंध में दीर्घकालीन उपाय के रूप में प्रशासन के लिए गैस, पेट्रोल, मिट्टी के तेल के भंडारों को भी भली-भांति भूकंप-प्रतिरोधी बनाना बहुत जरूरी है।

भूकंप के बाद पीड़ितों को जल्दी-से-जल्दी सुरक्षित स्थानों/अस्पतालों में पहुंचाना होता है। इसके लिए सबसे छोटे मार्ग का उपयोग करना चाहिए। सावधानी के तौर पर इस मार्ग के साथ भी पानी की बड़ी टंकियां और आग बुझाने के साधन स्थापित किए जा सकते हैं। भूकंप के कारण होने वाले अग्निकांडो के संबंध में उपर्युक्त सब वस्तुओं और सावधानियों से भी कहीं अधिक जरूरी है अग्निशामक दल(फायर ब्रिगेड) का सदैव तैयार रहना। इससे आग लग जाने की स्थिति में उस पर तुरंत काबू पाया जा सकता है। अग्निशामक दल को सब सुविधाओं से लैस रखने और उसे आग बुझाने के लिए सदैव तैयार रखने के कार्य सरकार ही कर सकती है।

भूकंप शरणगाह

किसी भी बस्ती को, चाहे वह कितने भी सुनियोजित तरीके से बसाई गई हो, भूकंप-विशेष रूप से भीषण भूकंप-के झटकों से पूर्णतः सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। वहां के निवासियों के लिए भूकंप का खतरा बना ही रहता है। इस स्थिति में उनके लिए ऐसे शरणगाहों(शेल्टरों) की जरूरत होती है जहां वे भूकंप के बाद शरण ले सकें। इन शरणगाहों में वे उस समय तक रह सकते हैं जब तक किसी अधिक उपयुक्त निवास-स्थल की व्यवस्था नहीं हो जाती। इस प्रकार के शरणगाहों का निर्माण सरकारी विभाग ही कर सकते हैं। आमतौर पर व्यक्तिगत रूप से किसी के द्वारा इनका निर्माण करना संभव नहीं होता।

किसी भीषण भूकंप के आ जाने पर इन शरणगाहों में शरण लेने वालों की संख्या सैकड़ों ही नहीं, हजारों तक पहुंच सकती है। इसलिए उनमें इतने व्यक्तियों के कुछ दिनों तक रहने हेतु पर्याप्त सुविधाएं होनी चाहिए। ये शरणगाह ऐसे स्थलों पर होने चाहिए, जहां भूकंप-पीड़ितों को शीघ्रातिशीघ्र सुरक्षित पहुंचाया जा सके।

अलार्म व्यवस्था

26 दिसंबर, 2004 के भूकंप के फलस्वरूप उत्पन्न सुनामियों ने लोगों, विशेष रूप से सागर-तटों के निकट रहने वालों के दिलों में दहशत पैदा कर दी थी। उसके बाद लोगों के मस्तिष्क में यह विचार आया-यदि समय रहते उन्हें सुनामियों के आगमन के संकेत मिल जाते तो मृतकों की संख्या में भारी कमी की जा सकती थी। अतएव हमारे देश के तटीय प्रदेशों में भी अलार्म व्यवस्था स्थापित करने का विचार सामने आया। जापान एवं हवाई द्वीप आदि में, जहां सुनामी अकसर आती रहती हैं, इस प्रकार की अलार्म व्यवस्था है।

भूकंप के दौरान सबसे अधिक हानि इमारतों के गिरने से होती है। मलबे में दबने से ही सबसे अधिक लोग मरते और घायल होते हैं। इसलिए भूकंप से होनेवाली हानि को कम करने के लिए यह जरूरी है कि इमारतों को भूकंप-प्रतिरोधी बनाया जाए, जिससे ये भूकंप के झटकों को सहन कर सकें और कम-से-कम क्षतिग्रस्त हों। ऐसा करने की तकनीक की चर्चा करने से पहले यह जानना आवश्यक होगा कि भूकंप से इमारतें क्षतिग्रस्त क्यों और कैसे होती हैं?

आत्मकथा – एक फाइल की

निम्मी भट्ट,
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

फाइल यह नाम सुनते ही दिमाग में कई प्रश्न उठने लगते हैं क्योंकि किसी भी कार्यालय में इसके बिना कार्य नहीं किया जा सकता। हर कार्यालय में चाहे वह सरकारी हो या प्राइवेट फाइलों पर काम किया जाता है। हां यह अलग बात है कि फाइलों पर कार्य करने का तरीका हर कार्यालय व हर व्यक्ति का अलग अलग होता है। अतः यह सर्वमान्य है कि फाइल के बिना शायद ही कोई कार्यालय होगा।

इन्हीं फाइलों के बीच कार्य करते हुए एक दिन मेरे पास एक कर्मचारी की व्यक्तिगत फाइल (पर्सनल फाइल) आई जिसे देख कर ऐसा लगा कि वह हंसते हुए कह रही हो कि मैं तो एक पुलिंदा हूँ कागजों का जिसमें हर दिन नए कागज पुराने कागजों के ऊपर लगाए जाते हैं और इस तरह मैं समय के साथ साथ बढती जा रही हूं, मोटी होती जा रही हूं। मेरा कोई ठिकाना नहीं हैं। कभी मैं मेज पर आ जाती हूँ कभी अलमारी में बंद हो जाती हूं तो कभी अलमारी से निकाल ली जाती हूं कभी धूल में पड़ी मिलती हूं। आप यदि कभी कार्मिक प्रभाग में आए हों तो आपने मुझे वहां अवश्य देखा होगा। यदि आप वहां के कर्मचारी हैं तो कहना ही क्या क्योंकि कोई मेरी बहन आपके नाम की भी जरुर होगी। क्यों आपने मुझे पहचाना? हां भाई हां, मुझे आप कैसे नहीं पहचानोगे। मैं ही तो हूं एक अदद व्यक्तिगत फाइल जो किसी कर्मचारी के नौकरी में आने पर सबसे पहले बनाई जाती है।

मेरे प्यारे अफसरों और बाबुओं, मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाती हूं। तुम मेरा दर्द क्या समझोगे क्योंकि तुम्हारे लिए तो मैं एक बेजान फाइल हूं। परन्तु याद रखना तुम्हारी नौकरी के लिए मैं सबसे कीमती और अनमोल भी हूँ। तुम मुझे उपयोग करते हो दो चार पेपर लगाए उस पर कुछ लिख दिया दस्खत कर दिये और इधर उधर पटक दिया। क्या कभी सोचा है कि मुझे भी चोट लगती है। हां, मुझे भी चोट लगती है, मेरी भी इज्जत है। अफसर, बाबू, दफतरी, चपरासी के हाथों अब मुझे इधर उधर घूमने की आदत सी हो गई है। तबादले और रिटायरमैंट के साथ कितने हाथ बदले, पर मैं अभी भी चुस्त दुरुस्त हूं। आजकल मैं बहुत दुखी हूँ क्योंकि मुझे सुनने में आया है कि मुझे अब एक नामुराद मशीन में बंद कर दिया जाएगा जिसे कहते हैं कम्प्यूटर । जाते जाते मैं अपनी जिंदगी के सफर के बारे में जरूर बताना चाहती हूँ क्योंकि आगे न जाने मैं आपको नजर भी आऊं या नहीं।

बहुत समय पहले की बात है । एक व्यक्ति इस सरकारी कार्यालय में भर्ती होने आया। एक बिल्कुल नई किताब पर उसका नाम लिखा गया उसका फोटो चिपकाया गया, उसके अगूंठे का

निशान लिया गया और फिर उसमें उसके हस्ताक्षर लिये गए। इसे सेवा पुस्तिका कहा जाता है। यही है मेरी प्यारी खुशकिस्मत बहन जिसे अलमारी में संभाल कर रखा जाता है और साल में एक या दो बार ही तंग किया जाता है। इस नए कर्मचारी को कार्यालय में नियुक्त किया गया और दो गत्तों के बीच एक धागे से कुछ कागज पत्र लगा कर मेरा जन्म हुआ और मुझे भी एक नाम मिला पी/पीएफ/आर.ए. । समझे कि नहीं शायद नहीं पी मतलब पर्सनल (कार्मिक) पीएफ मतलब पर्सनल फाइल और आर ए मतलब राम अवतार जो उस व्यक्ति का नाम था। इस तरह मेरा जन्म हुआ। इसके बाद मुझे एक अलमारी में बंद कर दिया गया जहां मेरी ओर भी कई बहनें थी । कोई पतली, कोई मोटी, कोई चुस्त दुरूस्त, कोई जर्जर और कोई मेरी तरह नन्हें मुन्ने बच्चों जैसी ।

अरे ये क्या ! एक बाबू आया और मुझे अलमारी से निकाल कर अपनी मेज पर ला पटका। उस समय मैं बहुत छोटी थी, इसलिए बहुत डरी हुई थी। उस बाबू ने एक कागज लगाया और उसमें कुछ लिख दिया। बाद में मालूम हुआ कि राम अवतार जी किसी दूसरे विभाग में कार्य करना चाहते हैं। बाबू ने मुझे दूसरे बड़े बाबू की मेज पर पटक दिया। वह बिना देखे ही बोले फाइल साहब को दे आओ । पर मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। बाबू मुझे उठा कर एक बडे व सुन्दर से कमरे में ले गये । वहां चश्मा पहन कर एक रोबदारा व्यक्ति बैठा हुआ था । उसने पूछा फाइल मिली, यहीं रख दो । तब मेरी समझ में आया कि मैं ही फाइल हूं। मुझे ही फाइल कहा जा रहा है और इस तरह मुझे अपने नामकरण का पता चला। साहब मुझे काफी देर तक देखते रहे । पन्ने इधर से उधर और उधर से इधर पलटते रहे। फिर उन्होंने पूछा दूसरे विभाग में जाना चाहते हों। दूसरी तरफ से किसी ने कहा जी सर आपकी मेहरबानी होगी। मेरी नजर आवाज की ओर उठी उस समय मैंने पहली बार राम अवतार को देखा। मेरी और राम अवतार की यह पहली मुलाकात थी। वह लगभग 22 वर्ष का एक नौजवान था । इस कार्यालय में भर्ती हुआ एक नया कर्मचारी। ठीक है, आप जाइये और राम अवतार वहां से तुरंत चला गया। साहब ने उस फाइल पर रखे कागज पर कुछ लिखा और घंटी बजाई। साहब का चपरासी अन्दर आया और मुझे उठा कर ले गया। मैंने भी चैन की सांस ली और रिलेक्स हो गई। अब अलग अलग कमरों मेजों और अलमारियों में यात्रा करते हुए कितने ही साल बीत चुके हैं।

मैंने कैसे कैसे दिन देखे। केवल मुझे ही पता है कि राम अवतार के कितनी बार ट्रांसफर हुए, प्रमोशन हुए, पीएफ एडवांस लिया, छुटिटयां ली और न जाने क्या क्या । एक बार तो मैं कोर्ट तक हो आई । मुझे ही पता है वहां मेरी क्या गत बनी । काश ! मैं भी बोल सकती तो तुम्हें बताती कि राम अवतार कैसा आदमी था। एक बार ऐसा न जाने क्या हुआ मुझे अलमारी से निकाल कर कहीं अलग रख दिया गया। मुझे सब इधर उधर ढूंढ रहे थे, मगर मेरा बाबू शांत बैठा था, बिल्कुल शांत। फिर न जाने क्यूं मेरे कुछ पन्ने फाइल से निकाल दिये गये। मैं समझ गई कुछ गड़बड़ जरूर है। जब मैं साहब के कमरे से बाहर आई तो राम अवतार व बाबू ने एक साथ ठंडा, अरे अरे मतलब लिम्का पी । मैं समझ नहीं सकी कि क्या बात थी। राम अवतार की सेवा का पूरा का पूरा इतिहास मेरे अन्दर बंद था। अब तक न जाने कितने बाबू बदले कितने

अफसर बदले, परन्तु मैं उम्र के साथ-साथ मोटी और जर्जर होती गई। मेरे अन्दर लगे कागज पीले पड़ गए । कई बार तो मैं दीमक के प्रकोप से भी बाल बाल बची हूँ। राम अवतार भी अब बूढ़ा हो रहा है और जल्दी ही रिटायर हो जाएगा। राम अवतार की रिटारमैंट की तरह मेरे भी कुछ ही दिन बचे हैं। उसकी रिटायरमैंट के साथ ही मैं भी उस बड़े व अंधेरे रिकार्ड रूम में बंद हो जाऊंगी जहां मेरी कई बहनें बंद हैं। बस फिर क्या मैं वहां बैठे-बैठे अपनी पुरानी यादों..... बाबू जी, बडे साहब जी, राम अवतार जी, जो इसका मुखिया है की यादों के सहारे अपने दिन काटूंगी। अब तो मुझे चाहे चूहे कुतरे या दीमक खा जाए इसकी किसी को कोई परवाह नहीं होगी। यदि बच भी गई तो अंत में 10 साल बाद मेरी पुरानी बहनों की तरह मुझे भी जला या नष्ट कर दिया जाएगा। फिर कोई राम अवतार मेरे पास नहीं आएगा। ईश्वर जाने क्या पता उसे मेरे से पहले ही जला दिया गया हो। अब तो बस इसी डर से सहमी हुई मैं इस बड़े से रिकार्ड रूम में बैठी हुई हूँ कि न जाने कब मुझे उस नामुराद मशीन में बंद कर दिया जाएगा जिसे कहते हैं कम्प्यूटर । फिर मैं तुम्हें कभी नजर नहीं आऊंगी और फिर शायद तुम मुझे देखेने के लिए तरस जाओगे । हां.....

पिताजी ने बेटे को बुलाया पास में बिठाया,
बोले आज राज की मैं बात ये बताऊंगा।
शादी तो है बरबादी मत करवाना बेटे,
तुमको किसी तरह मैं शादी से बचाऊंगा।
बेटा मुस्कुराया बोला ठीक फरमाया डैड,
मौका मिल गया तो मैं भी फर्ज ये निभाऊंगा।
शादी मत करवाना तुम कभी जिन्दगी में,
मैं भी अपने बच्चों को यही समझाऊंगा।

\- अरुण मित्तल ''अदभुत''

कार्मिक प्रभाग

निम्नलिखित कार्मिकों को उनके नाम के समक्ष दर्शाए गए विवरण के अनुसार नियुक्त किया गया ।

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	तैनाती का स्थान
1.	रोहित पसरीजा जियोलोजिस्ट	जी.डब्ल्यू.आर.डी. एण्ड एम.आर. प्रभाग, नई दिल्ली
2.	सूर्यनाथ गुप्ता जियालोजिस्ट	जी.डब्ल्यू.आर.डी. एण्ड एम.आर. प्रभाग, नई दिल्ली
3.	तरूण बजाज अभियंता प्रशिक्षु (मैकेनिकल)	पावर प्रभाग नई दिल्ली
4.	लोहित गुप्ता अभियंता (ई. एण्ड सी.)	भुवनेश्वर कार्यालय
5.	अरूण कुमार माहू सहायक प्रबंधक (वित्त)	वित्त प्रभाग गुडगांव कार्यालय
6.	श्रेय वधवा अभियंता प्रशिक्षु (मैकेनिकल)	भूटान
7.	संतोष प्रभाकर पाण्डे अभियंता (ई. एण्ड सी.)	पावर प्रभाग नई दिल्ली
8.	अक्षय वत्स अभियंता (ई. एण्ड सी.)	पावर प्रभाग नई दिल्ली
9.	सचिन गुप्ता उप प्रबंधक (वित्त एवं मार्केटिंग)	लाओस
10.	चिराग अग्रवाल उप प्रबंधक (वित्त एवं मार्केटिंग)	देहरादून
11.	अपूर्वा अग्रवाल अभियंता प्रशिक्षु	बी.डी.प्रभाग नई दिल्ली
12.	पंकज अभियंता (ई. एण्ड सी.)	आई.टी.प्रभाग गुडगांव कार्यालय

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	तैनाती का स्थान
13.	सौरभ शर्मा अभियंता (ई. एण्ड सी.)	पावर प्रभाग नई दिल्ली
14.	विनय दूबे अभियंता (सिविल)	बी.डी.प्रभाग नई दिल्ली
15.	ए.अहमद खान अभियंता (सिविल)	भूटान
16.	दीपेन्द्र अभियंता (सिविल)	गं.स. एवं पर्यावरण प्रभाग गुडगांव कार्यालय
17.	प्रवीन कुमार माहौर प्रोग्रामर	आई.टी.प्रभाग गुडगांव कार्यालय
18.	गणेश कुमार दास जियाफिजिस्ट	जी.डब्ल्यू.आर.डी. एण्ड एम.आर. प्रभाग, नई दिल्ली
19.	हिमान्शु गुप्ता प्रबंधन प्रशिक्षु	पावर प्रभाग नई दिल्ली
20.	विनोद कुमार वी.एच. वरि.अभियंता (सिविल)	हैदराबाद

सेवानिवृत्ति – वाप्कोस परिवार अपने निम्न कार्मिकों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है :

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम
1.	मंजीत कौर	प्रबंधक (का./प्रशा.)
2.	मंजू अरोड़ा	अपर मुख्य प्रबंधक (का./प्रशा.)

निम्नलिखित कार्मिकों द्वारा वाप्कोस की सेवाओं से त्यागपत्र दिया गया :

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम
1.	जसवंत राय	डाटा एन्ट्री आपरेटर
2.	नालनि राम किशोर	अभियंता प्रशिक्षु
3.	नदीम अहमद	अभियंता प्रशिक्षु

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम
4.	वि.निगम	अभियंता
5.	गर्वित गुप्ता	अभियंता
6.	गीत अग्रवाल	अभियंता
7.	अंकित महेश्वरी	अभियंता प्रशिक्षु

(एस.विजय राव)
वरि.महा प्रबंधक (का./प्र. व वि.)

आंवले के गुण

आंवले को आयुर्वेद में गुणों की खान माना गया है। यह कई बीमारियों को दूर करता है। इसका अपना पौष्टिक महत्व भी है। संतरे से बीस गुना ज्यादा विटामिन सी इसमें पाया जाता हैं। आंवले को गूजबेरी के नाम से भी जाना जाता हैं। आंवले का सबसे बड़ा गुण यह है कि इसे पकाने के बाद भी इसमें मौजूद विटामिन सी खत्म नहीं होता। आज हम आपको बताने जा रहे हैं आंवले के कुछ ऐसे ही पौष्टिक गुणों के बारे में......

1. आंवला मोतियाबिंद की परेशानी में फायदेमंद रहता है।
2. सुबह नाश्ते में आंवले का मुरब्बा खाने से आप स्वस्थ बने रह सकते हैं।
3. आंवला हमारी आंखों के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है।
4. आंवला हमारे पाचन तन्त्र और हमारी किडनी को स्वस्थ रखता है।
5. आंवला अर्थराइटिस के दर्द को कम करने में भी सहायक होता है।
6. आंवला खाने से सर्दी, खांसी, जुकाम जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है।
7. दिल को सेहतमंद रखने के लिए रोज आंवला खाने की आदत डालें। इससे आपके दिल की मांसपेशियां मजबूत होंगी।
8. आंवला बालों को मजबूत बनाता है, इनकी जड़ों को मजबूत करता है और बालों का झड़ना भी काफी हद तक रोकता है।
9. आंवला खाने से कब्ज दूर होती है। यह डायरिया जैसी परेशानियों को दूर करने में बहुत फायदेमंद है।
10. एसीडिटी की समस्या है, तो एक ग्राम आंवला पाउडर और थोड़ी-सी चीनी को एक गिलास पानी या दूध में मिलाकर लें।
11. आंवला खाने को अच्छी तरह पचाने में मदद करता है, जिससे आपको खाने के तमाम न्यूट्रिएंट्स मिलते हैं|

कार्यालय के कार्य में मूल टिप्पण आलेखन से बढ़ाएं राजभाषा का प्रयोग

निम्मी भट्ट
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

टिप्पण-आलेखन किसी भी कार्य का मूल सार है जिससे कार्यालय का अधिकतम कार्य सम्पन्न होता है । सरकारी कार्यालयों में टिप्पण-आलेखन एक ऐसा क्षेत्र है जहां से किसी भी प्रकार का कार्य प्रारंभ होता है । परन्तु अधिकतम कार्य अँग्रेज़ी में किया जाता है । यदि इसमे से 50% कार्य भी हिन्दी में किया जाए तो निसंदेह कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग काफी बढ़ सकता है । कार्यालय में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा में अपना कार्यालय का कार्य करने में हिचकिचाते हैं और कार्यालय का अपना कार्य अँग्रेज़ी में ही करते हैं । इसे ध्यान में रखते हुए कुछ सुझाव/परामर्श इस लेख के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत हैं ।

यह तो आप सब जानते हैं कि बाहर से प्राप्त किसी पत्र का जवाब देने या किसी प्रस्ताव पर कार्यवाही हेतु फाइल विभिन्न स्तर के अधिकारियों व कर्मचारियों के पास जाती है जिस पर वे संबंधित विषय पर लिखते हैं जिसे 'नोटिंग' कहा जाता है । इससे एक सामूहिक विजन सामने आता है और किस अधिकारी/कर्मचारी ने क्या लिखा है उसका रिकार्ड भी रहता है । इसके साथ कार्यालय में लिए गए निर्णयों/की गई कार्यवाही को सूचित करने के लिए ड्राफ्ट तैयार किया जाता है जिसे 'ड्राफ्टिंग' कहा जाता है, इसे अनुमोदन के लिए सक्षम अधिकारी को प्रस्तुत किया जाता है । यदि इसमें कोई संशोधन हो तो, संशोधन के बाद इसे फेयर किया जाता है जो पत्रादि का रूप ग्रहण कर लेता है ।

हिन्दी में टिप्पण-आलेखन पर इतना अधिक बल इसलिए दिया जाता है, क्योंकि हिन्दी भाषा को देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली व समझी जाने के कारण हमारे संविधान निर्माताओं ने राजभाषा के रूप में अपनाया है । अतः प्रत्येक कार्मिक का यह संवैधानिक ही नहीं नैतिक कर्तव्य भी है कि वह अपना कार्यालय का अधिकतम कार्य हिन्दी में ही करे ।

हिन्दी में काम करने में कुछ कठिनाईयां अवश्य आती है परन्तु यदि हिन्दी में कार्य की ललक व इच्छा है तो हिन्दी में आप अच्छी नोटिंग-ड्राफ्टिंग कर सकते हैं क्योंकि हिन्दी हमारी आम बोलचाल व समझने की भाषा है । मूल टिप्पण-आलेखन के समय नीचे दी गई बातों का अवश्य ध्यान रखें :-

1. हिन्दी में टाइप करें या करवाएं अथवा स्पष्ट व साफ अक्षरों में लिखें ताकि पढ़ने वाले को मुश्किल न हो ।

2. टिप्पणी लिखते समय संदर्भ को बार-बार न दोहराएं । पुरानी संदर्भ यदि फाइल में उपलब्ध है तो उसे 'पर्ची' (Flag) द्वारा दर्शाएं ।

3. हिन्दी में कार्य करने का एक अच्छा उपाय है कि आप छोटी-छोटी टिप्पणियों की सूची अपने पास रखें जिसका आवश्यकतानुसार आसानी से प्रयोग किया जा सकता है ।

4. कई बार टिप्पणियां लिखते समय हिन्दी के शब्दों की समस्या आती है क्योंकि आपको उचित शब्द नहीं मिलते । इस समस्या का समाधान आप आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग करके कर सकते हैं ।

5. मूलरूप से हिन्दी में लिखे अनुवाद का सहारा न लें ।

6. कई कार्यालयों द्वारा अपनी शब्दावली बनाई गई है उसकी प्रति तथा भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा तैयार की गई विभिन्न विषयों की शब्दावलियों की प्रति अपने पास रखें ताकि कार्य करने में आसानी रहे तथा ये शब्दावलियां हिन्दी में कार्य करने में काफी उपयोगी सिद्ध होगी ।

7. अखिल भारतीय शब्दों का ही प्रयोग करें तथा स्थानीय शब्दों के प्रयोग से बचें क्योंकि केन्द्रीय कार्यालय पूरे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

8. प्राप्त पत्रों को ध्यान से पढ़ने के बाद ही टिप्पणी को क्रमवार ढंग से लिखें । पहले पत्र का संदर्भ दें, फिर मांगी गई सूचना के बारे में बताएं, उसके बाद उस संबंध में नियमों का संदर्भ दें तथा अंत में अपना निष्कर्ष अथवा सुझाव लिखें । इस प्रकार क्रमवार टिप्पणी लिखने से आपकी टिप्पणी स्पष्ट व सही बन जाएगी ।

9. इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आपसे पहले किसी कार्मिक ने हिन्दी में टिप्पणी लिखी है तो उसके बाद कृपया आप भी हिन्दी में ही टिप्पणी लिखें । इससे आपसे पहले व आपके बाद फाइल पर टिप्पणी लिखने वाले कार्मिक का उत्साह बढ़ता है और फाइल पर हिन्दी में लिखने का सिलसिला आगे बढ़ता जाता है जिससे कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग निसंदेह बढ़ता है ।

10. टिप्पणी लिखते समय यदि उचित समझा जाए, कृपया, कष्ट करें, किया जा सकता है जैसे नम्रता व शिष्टाचार वाले वाक्यांशों को प्रयोग कर सकते हैं ।

हिन्दी में ड्राफ्टिंग हेतु अभ्यास, परिश्रम व सतर्कता की आवश्यकता होती है क्योंकि ड्राफ्ट बनाने में कई बार काफी समय लग जाता है और अच्छी ड्राफ्टिंग करना भी एक कला है । ड्राफ्टिंग अच्छी बने इसके लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखकर ड्राफ्टिंग की जाए :-

1. ड्राफ्ट अपने आप में पूर्ण हो अर्थात उसमें बैठक, कार्यशाला आदि की सूचना हेतु उसमें समय, तारीख व स्थान आदि के संबंध में स्पष्ट व पूर्ण जानकारी हो । यदि इसमें से कोई चीज रह गई

तो आपके पत्र का कोई महत्व नहीं होगा । अतः ड्राफ्ट में कोई चीज छूटनी नहीं चाहिए और न ही अनावश्यक चीजों को जोड़ा जाना चाहिए ।

2. अर्ध सरकारी पत्रों की भाषा अधिक आत्मीय एवं मैत्रीपूर्ण होनी चाहिए । ये पत्र समकक्ष एवं ऊपर के अधिकारियों को तथा विशेष परिस्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए लिखे जाते हैं । इन पत्रों को अंत में 'आपका' या 'शुभकांक्षी' लिखा जाना चाहिए । इन पत्रों में संबोधन का भी विशेष महत्व होता है अतः प्रिय श्री................ व प्रिय सुश्री......... आदि लिखे जाते हैं ।

3. पत्रों में संबोधन के संबंध में, अँग्रेज़ी के 'सर' व 'मैडम' शब्दों के लिए सरकारी पत्रों में 'महोदय' व 'महोदया' लिखा जाए तथा अंत में 'भवदीय' या 'भवदीया' लिखेंगे ।

4. अँग्रेज़ी में कई वाक्यखण्डों को जोड़ते हुए एक-एक पैराग्राफ तक के वाक्य देखे जाते हैं परन्तु हिन्दी सरल व सीधे वाक्य प्रयोग करने की भाषा है । अतः हिन्दी के ड्राफ्टों में यथासंभव हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप सरल व सुबोध वाक्यों का प्रयोग करें ।

5. ड्राफ्ट में द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग न करें क्योंकि सरकारी पत्रों का एक विषेष प्रयोजन होता है और इससे अलग अर्थ निकलने की समस्या आ सकती है ।

6. ड्राफ्ट में 'संदेश' (Messege) विशेष महत्व रखते हैं । अतः इसका ध्यान रखा जाए कि वह प्रयोगकर्त्ता तक पहुंचे और अनावश्यक पत्राचार से बचा जा सके ।

उपरोक्त सुझाव तो केवल संकेत हैं । अँग्रेज़ी का ड्राफ्ट बनाने में जितनी मेहनत व सावधानी बरती जाती है उतनी ही यदि हिन्दी का ड्राफ्ट बनाने में की जाए, तो निसंदेह हिन्दी में बहुत ही अच्छी नोटिंग-ड्राफ्टिंग हो सकती है और यह टिप्पणी लिखने या ड्राफ्ट बनाने वाले कार्मिक पर निर्भर करता है । अँग्रेज़ी के शब्दों का अनुवाद न कर मूल रूप से हिन्दी शब्दों का प्रयोग अपनी राजभाषा को आगे बढाने में नि:सन्देह आपका यह महत्वपूर्ण कदम होगा ।

''हिन्दी अपनाइए इसे अपना बनाइए
स्वतंत्रता का मान बढाइए ।''

विभागीय कामकाज में प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्द

Drought	-	अनावृष्टि
Design Storm	-	अभिकल्प वर्षा
Semi Humid	-	अर्ध आर्द्र
Semi Arid	-	अर्ध शुष्क
Wet Year	-	आर्द्र वर्ष
Class A-Plan	-	ए-वर्ग पात्र
Hail	-	ओला
Dew Point	-	ओसांक
Tornado	-	घूर्णवात
Climate	-	जलवायु
Climate Cycle	-	जलवायु चक्र
Climatology	-	जलवायु विज्ञान
Thunder Storm	-	तडित वृष्टि
Storm	-	तूफान
Eye of the Storm	-	तूफान अक्षि
Storm Interval	-	तूफान अंतराल
Nucleus	-	नाभिक
Pan Coefficient	-	पात्र गुणांक
Anticyclone	-	प्रतिचक्रवात

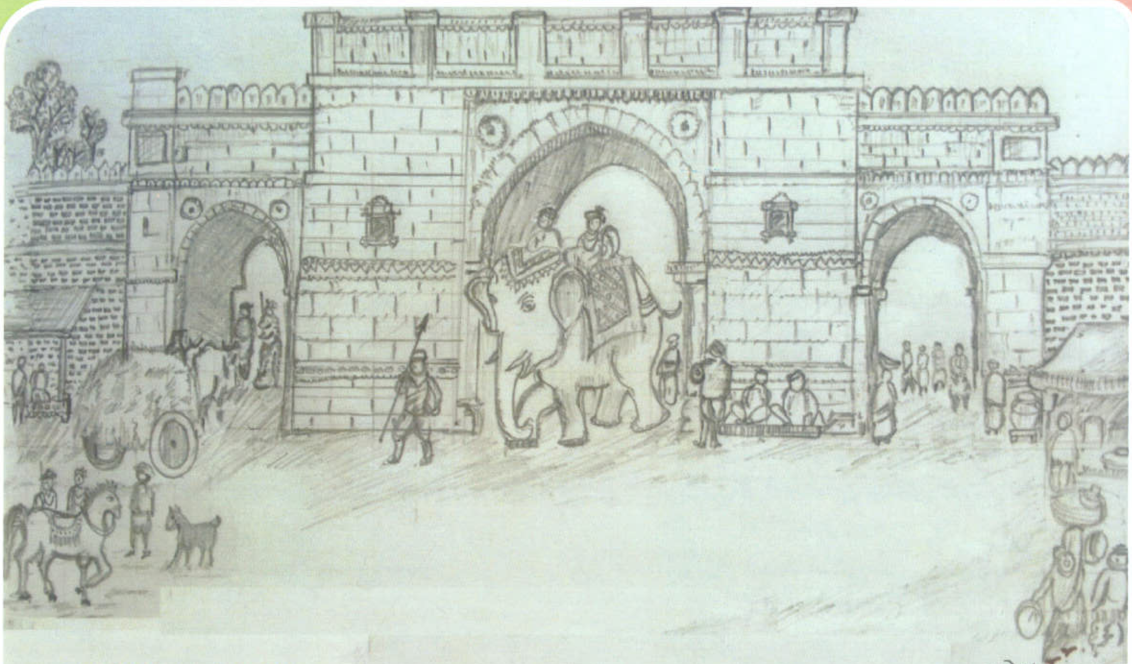

दिल्ली दरवाजा - अहमदाबाद

मुकेश शर्मा, अपर मुख्य अभियंता, अहमदाबाद कार्यालय
द्वारा बनाई गई चित्रकारियां

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

"एक बूँद"

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह ! क्यों घर छोड़कर मैं यों कढी ।

देव मेरे भाग्य में क्या है बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में ।
या जलूँगी फिर अंगारे पर किसी,
चू पडूँगी या कमल के फूल में ।

बह गयी उस काल एक ऐसी हवा
वह समुन्दर ओर आई अनमनी।
एक सुन्दर सीप का मुहँ था खुला
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते, सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर ।

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001
निगमित कार्यालय : 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सैक्टर-18, गुड़गांव-122 015, (हरियाणा)
दूरभाष : 0124-2340548 फैक्स : 0124-2397392,
ई-मेल : hindi@wapcos.gov.in वेबसाईट : www.wapcos.gov.in